।। श्री सुरभ्यै नमः ।।

मासिक

कामधेनु कल्याण पत्रिका

सितंबर 2025

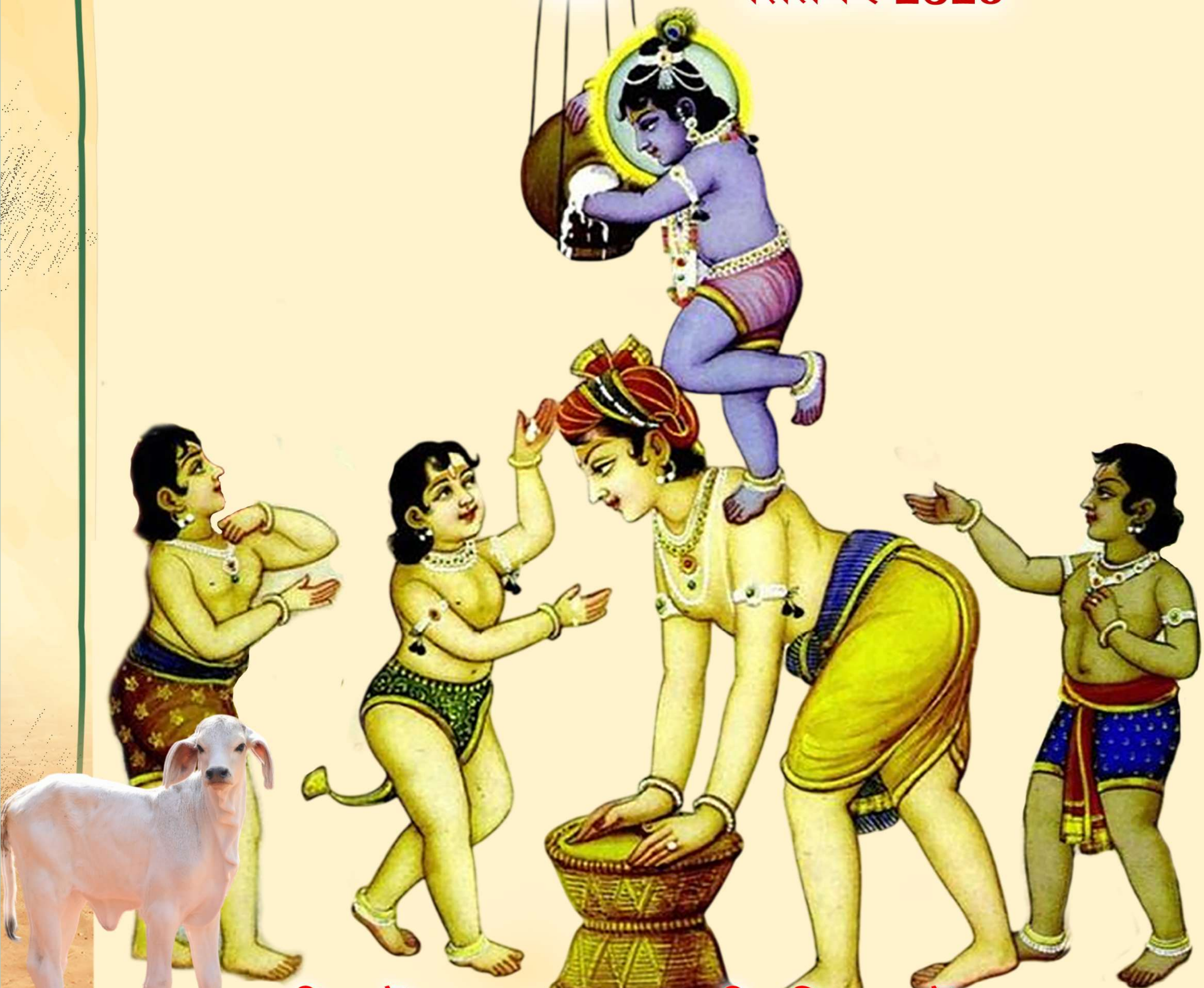

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा

वर्ष : 02 Website:-www.godhampathmeda.org Email :- K.k.p.pathmeda@gmail.com अंक : 06

सुरभि उवाच

हे मेरे प्रिय पुत्रों !

आप सभी को मेरा बहुत–बहुत प्रेमभरा मंगलमय शुभ आशीर्वाद!

हे मेरे प्रिय पुत्रों! संसार में सबसे बड़ा कार्य और सबसे बड़ी सेवा कहें तो गो की सेवा है, सबसे बड़ा पुण्य कहें तो गो की सेवा है और सबसे बड़ा कल्याण का साधन है तो वह गो की सेवा है। वेदवाणी, गुरुवाणी और संतवाणी ने यूं ही गो की इतनी महिमा नहीं बताई है। मेरे वंश की सेवा के निमित्त ईश्वर स्वयं गोपाल बनकर मनुष्य का रूप धरकर धरती पर केवल अवतरित ही नहीं होते हैं, बल्कि स्वयं बचपन से ही नंगे पाँव गोओं को वन में चराकर, गोओं और गोपालकों को अभय करके संसार को गो की महिमा बताते हैं।

हे मेरे पुत्रों! वर्तमान युग में इस धरती पर सबसे बड़ा गायों का धाम, गोसेवा का सबसे बड़ा प्रेरणास्त्रोत है तो वह श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा है। मेरा जो भी अतिशय प्रिय होता है उसको मैं अपने वंश की सेवा में लगाकर उसके मानव जीवन को सफल कर देती हूँ। आपके इस जीवन को धन्य करने के लिये ही मैंने गोसेवा से और पथमेड़ा के रचनात्मक गोसेवा महाअभियान से आप सबको जोड़ा है।

हे मेरे बालकों! मेरी ही वात्सल्यमयी कृपा से यहाँ आकर आपको गाय, गोविन्द और संत इन तीनों का अतिदुर्लभ सानिध्य प्राप्त हो रहा है जो कि करोड़ों–करोड़ों जन्मों में नाना प्रकार के जप, तप, यज्ञ और दान करने से भी प्राप्त होना कठिन है। ऐसे दुर्लभ संयोग तक आज के बड़े–बड़े संत महात्माओं और भगवद्भक्तों की सोच भी नहीं पहुँच पाती है, उस संयोग की गोद में मैंने आपको सहज में ही लाकर बैठा दिया है। मैं क्या बताऊँ आप अपनी आँखें खोलो और मेरे दुलार का अनुभव करो।

हे पुत्रों! तुम्हारे पास जो श्रम, शक्ति, समझ और समय है वे अनित्य है और एक सीमित समय के लिये ही आपके पास है। आपसे पहले ये और किसी के पास थे और आगे ये और किसी के पास होंगे। तुम्हारे ये साधन गोमाता की सेवा में लग रहे हैं, यह आपके भाग्य की बात है और मेरे लिये संतोष की बात है कि इससे आप जैसे मेरे सुपुत्रों का मंगल ही मंगल होगा।

हे मेरे प्रिय पुत्रों! गो परम दयालु और कृपालु है। अपने सेवक पर हमेशा अपार कृपा बरसाती है। आप मेरे वंश की सेवा में आ गये हैं, अब आप अपनी सेव्या गो की अपार महिमा पर श्रद्धा और विश्वास करके अपने भावी जीवन के लिये निश्चिन्त होकर लगे रहो, सब मंगल ही मंगल होगा। इसी के साथ एक बार पुनः आप सभी को मेरा बहुत–बहुत प्यार भरा मंगलमय शुभ आशीर्वाद।

तुम्हारी
प्यारी माँ सुरभि

।। वन्दे धेनुमातरम्।।

यया सर्वमिदं व्याप्तं जगत् स्थावरजंगमम्। तां धेनुं शिरसा वन्दे भूतभव्यस्य मातरम्।।

वर्ष:2

कामधेनु-कल्याण

अंक:6

भाद्रपद मास शुक्लपक्ष वि.सं. 2082 रा.शा: 1947 सितम्बर–2025

1. **श्रीकामधेनु कृपा प्रसाद** – परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्दजी महाराज	04
2. **वेदों में गो महिमा** – संकलित	07
3. **ठाकुरजी कब आओगे** – ठाकुरजी की प्रेरणा से	09
4. **श्रीमदभागवत कथा** – पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज	11
5. **भक्त चरित्र** – पू. द्वाराचार्य महंत स्वामी श्री राजेन्द्रदासजी महाराज	13
6. **गीता ज्ञान** – पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज	17
7. **श्रीराम कथा** – पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज	19
8. **श्री शिव महापुराण कथा** – पू. गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज	22
9. **गीत व कविता** – गोसेवक श्री धनराज जी चौधरी व श्री प्रेमसिंह जी उदेश	25
10. भज गोविंदम् – श्रीमदआदिशंकराचार्य द्वारा रचित	26
11. अनन्ययचेता (नित्य निरन्तर स्मरण) – साभार साधक संजीवनी	27
12. **श्री मद्भागवत कथा** – गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज	29
13. जाऊँ तो जाऊँ कहाँ – सम्पादक, अम्बा लाल सुथार	31
12. **संस्था समाचार** – अगस्त माह में हुए विभिन्न घटनाक्रमों का संक्षिप्त विवरण	32

गाय बिना गति नहीं

वेद बिना मति नहीं

संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक : परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानन्द जी महाराज

Web: www.godhampathmeda.org

Email : k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादकीय पता

श्री गोधाम महातीर्थ आनन्दवन-पथमेड़ा,
त.-सांचोर, जि.-जालोर (राज.) 343041

Mob. No. 9828052638

k.k.p.pathmeda@gmail.com

सम्पादक

अम्बा लाल सुथार

10 वर्षीय सदस्यता शुल्क–2100 रुपये मात्र

मूल्य:20 रुपये

श्री कामधेनु कृपा प्रसाद

(परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्रीदत्तशरणानन्दजी महाराज)

गाय और देवी शक्तियाँ

श्रुति एवं स्मृति में गोमाता को सर्वदेवमयी कहा गया है। देव नाम देने वालों का है। जो अकारण ही जीवनपयोगी सामग्री प्रदान करे उसे देव कहा जाता है अथवा अल्प मात्रा में ग्रहण करके उसे अनन्त बनाकर वापिस देता है उसे देव कहा जाता है जैसे जागतीक प्राणियों को जीवन धारणार्थ सूर्य ओज प्रदान करता है, चन्द्र रस प्रदान करता है, वायु श्वास प्रदान करता है, आकाश अवकाश देता है, जल प्यास बुझाता है तथा तृप्ति देता है, पृथ्वी आहार देती है तथा धारण करती है आदि-आदि। ये सब देव है, क्योंकि देते हैं और ये अकारण देने वाले देव हैं। इनके अतिरिक्त भी अनेक देव हैं। धर्मशास्त्रों में तैंतीस कोटि देवी-देवता बताये गये हैं। यज्ञ देवता, मेघ देवता, रुद्र देवता, वसु देवता, आदित्य देवता, अश्विनी देवता, धनवन्तरि देवता, वनस्पति देवता, ऋतु देवता, संत देवता, ब्राह्मण देवता, आचार्य देवता, पिता देवता, अतिथि देवता, लक्ष्मी देवी, सरस्वती देवी, काली देवी, गंगा देवी, माता देवी, आदि-आदि।

उपरोक्त सभी देने वाले हैं। इनमें अधिकतर तो अकारण ही देते हैं। इनका स्वभाव ही देने का है। इनका सम्पूर्ण निर्माण ही देवत्व से हुआ है। इनका जीवन प्रवाह केवल देने वाला देवता ही है और कुछ ऐसे है जो अनन्त गुणा देने के लिये अवतरित होते है। इनका लेना भी है तो देने के लिये है। क्योंकि इनका स्वभाव ही थोड़ी सी वस्तु को अनन्त बनाकर बिना किसी भेदभाव के सार्वभोम रूप से प्रेषित करना है। इनमें अल्प वस्तु को अनन्त गुणा बढ़ाने की क्षमता है। इनका जीवन प्रवाह केवल अल्प को अनन्त बनाकर बाँट देना ही है। यह जो देने की प्रवृति है इसी का नाम देवत्व है। एक देवत्व तो सूक्ष्म व सर्वव्यापक है परन्तु उपयुक्त स्थानों पर प्रकट होता है। तत्व से देव एक ही है, परन्तु इनकी अभिव्यक्ति अनेक स्थानों पर होती है। यह देवत्व तैंतीस कोटि रूपों में अभिव्यक्त होकर सम्पूर्ण संसार में चींटी से लेकर हाथी तक समस्त प्राणियों का धारण पोषण वर्धन व रक्षण करता है। स्थूल तथा सूक्ष्म देहधारी ब्रह्माण्ड के सभी प्राणी देव आश्रित हैं और वह देवत्व सभी को बिना पक्षपात देता है।

यह व्यापक देवशक्ति जागतीक प्राणियों के जीवन पोषण, संरक्षण आदि अनेक प्रकार की आवश्यक शक्तियों की पूर्ति हेतु तैंतीस कोटि रूपों में अभिव्यक्त होकर अपने क्षेत्राधिकार में आने वाली वस्तुओं को स्वाभाविक रूप से प्रदान करते रहते हैं। इन देवताओं में एक-एक के पास कुछ न कुछ स्वतंत्र रूप से देने योग्य है और यह देवता जिसके पास जो देने योग्य है वह देते ही रहते हैं। उपरोक्त समस्त देवता एक-एक करके जो कुछ चींटी से लेकर हाथी तक को दे सकते हैं, वह सब अकेली गोमाता देने में सक्षम है। इसलिए गोमाता को **सर्वे देवा: स्थिता देहे सर्वदेवमयी हि गौ:** कहा गया है। गोमाता अपने सहज स्वभाव से ही सबको सब कुछ देती ही रहती है। जैसे तैंतीस कोटि देव मिलकर चींटी से लेकर हाथी तक सबका धारण, पालन-पोषण व रक्षण करते हैं, उसी तरह पूज्या गोमाता अकेली ही सबका धारण, पोषण आदि करती है। पूज्या गोमाता तो तैंतीस कोटि देवताओं को भी पोषण प्रदान करती हैं।

तात्पर्य यह है कि पूज्या गोमाता जागतीक प्राणियों के साथ-साथ देव प्राणों व ऋषि प्राणों को

भी पोषण प्रदान करती है। इसलिये पूज्या गोमाता अनुपमेय है:- यथा **''गोस्तु मात्रा न विद्यते।''** गाय की बराबरी कोई नहीं कर सकता।

धर्म शास्त्रों में एक कथा प्रसंग आता है कि एक बार देवी-देवता, ऋषि-मुनि एवं ऋतुओं में वाद-विवाद होने लगा। आपस में सभी एक-दूसरे से अपने को बड़ा एवं महान मानते थे। आपस में निर्णय न होने पर सभी वेद भगवान के न्यायालय में उपस्थित हुए। भगवान वेद के आदेश पर सभी ने अपना-अपना मत प्रकट किया। किसी ने कहा कि मैंने अपने सत्कर्म से समाज को ऊपर उठाया, किसी ने कहा कि मैंने अपने कर्म से लोगों का उत्थान किया आदि। अपनी-अपनी प्रतिष्ठा के अभिलाषी देवतादि भगवान वेद के न्याय की प्रतीक्षा करने लगे।

इसका निर्णय देते हुए अथर्ववेद भगवान् ने कहा कि संसार में केवल एक ही सबसे महान एवं श्रेष्ठ है। उसी को चाहे गाय कहो या ऋषि या एक धाम या आशीर्वाद अथवा संसार में एक ऋतु या एक ही पूजनीय देव मानो जो समाज का सर्व प्रकारेण उत्थानकारी है। वैदिक मंत्रो में प्रश्न इस प्रकार है:-

को नु गौ:क एक ऋषि: किमु धाम का आशिष:। यक्षं पृथिव्यामेकवृदेकर्तु: कतामो नु स।।(अथर्व .8.9.25)

इसका स्पष्टीकरण इस प्रकार है- सम्पूर्ण धरातल एक ही विश्वरूपी गो है। सम्पूर्ण विश्व में व्याप्त एक ही परमात्मा परमेश्वर परब्रह्म श्रीराम सबके ज्ञाता और दृष्टा ऋषि हैं क्योंकि:-

रमन्ते योगिनाऽनन्ते नित्यानन्दे चिदात्मानि।
इति रामपदेनासौ परं ब्रह्मभिघीपते।।

(श्री रामपूर्वतापिन्युपनिषद् 1/6)

सब विश्व मिलकर एक ही धाम है, एक ही स्थान है। सबके लिये एक ही आशीर्वाद है जो सबको कल्याण के लिये ही दिया जाता है। एक ही ऋतु वह है, जो मानवों में शुभकर्म करने के लिये अखण्ड उत्साह रूप से रहती है। यथा :-

को गौरक एक ऋषिरेकं धामैकधाशिष:।
यक्षं पृथिव्यामेकवृदे कर्तुर्नाति रिच्यते।।

(अथर्व 8.9.26)

स्वतंत्र रूप से भी वेद भगवान ने पद्च परोपकारीयों में श्रेष्ठ गाय को ही माना है। अर्थात गाय जीवों के हर पहलुओं में लाभकरी है, यथा :-

चतुर्नमो अष्टकात्वो भवाय दश कृत्व: पशुपते नमस्ते।
तमेव पद्च पशवो विभक्ता गावो अश्वा: पुरुषा अजावय:।।

(अथर्व 11. 2. 9.)

हे प्राणियों के स्वामी श्रीरामजी! ऐसे प्राणियों को उत्पन्न करने वाले देव! आपको चारों प्रहर में साष्टांक एवं दसों नाखुनों सहित प्रणाम है। आपके द्वारा उत्पन्न जो आपके लिये ही पांच प्राणी नियुक्त किये गये है- गाये, घोड़े, पुरुष, हाथी और वृक्ष इन पांचों श्रेष्ठ प्राणियों में आपने गाय को प्रथम स्थान पर रखकर गाय की श्रेष्ठता प्रदर्शित की है। अतएव विश्वरूपी एक ही गो है जिसके दूध का विविध रूप से सेवन करते हैं तथा उसी से हृष्ट-पुष्ट होते हैं। इस गो की देखभाल करने वाले स्वामी एक ही परब्रह्म श्रीराम जी है। इस गो के रहने के लिये व्यापक विश्व ही गोशाला है और यही परम पद है।

ऋग्वेद में ऐसा वर्णन है- एक बार इन्द्र भगवान ने समस्त सभा के बीच यह घोषण की है कि पोषण करने वाले व्यापक तथा शत्रु दल पर आक्रमण करने वाले वीरवर हमारे कर्म गो को प्रमुख स्थान देकर नियुक्त कीजिये और हमें कल्याणमय स्थिति में कीजिये जिससे हम सभी सुखी रहें। अर्थात गाय की महिमा समझाइये।

इसका वैदिक मंत्र इस प्रकार है:-

ऊत नो धियो गोअग्रा: पूषन् विष्णवेवयाच:।
कर्ता न: स्वस्तिमत:।। (ऋ. 1.90.5)

अन्य देवों ने प्रार्थना की कि हमें उस प्रकार की बुद्धि प्रदान कीजिये जिस प्रकार की गाय को प्रमुख स्थान देकर या आगे करके स्वयं अनुचर बनकर

चलने से अजय हो। यथा:-

समिन्द्र राया समिषा रमेमहि सं वाजेभिः पुरुश्चन्द्रैरभिद्युभि।
सं देव्या प्रभव्या वीरशुष्मया गोअग्रयाश्वावव्या रमेमहि।।

(ऋ. 1.53.5)

वेद भगवान् का निर्देश है कि यदि किसी को इस माया राज्य में सब प्रकार का वैभव प्राप्त करना हो तो गोमाता की प्रमुख रूप से सेवा करे। रामायण भाष्यकार ने भी इसको स्वीकार करते हुए लिखा है कि :- **स्तोतृभ्यो दानार्थमग्रे प्रमुखत एव गावोः** अर्थात गायों का दान, गायों की पूजा-स्तुति प्रमुख रूप से करनी चाहिये, क्योकि दानों में गोदान प्रमुख है। इसीसे सभी देवता, गोमाता के साथ अपनी पूजा कराने के लिये विविध अंगो पर निवास करने लगे। गोमाता के गोबर-गोमूत्र की महानता समाज में सर्वकाल में विद्यमान रहे, इस उद्देश्य से स्वयं श्री लक्ष्मीजी भी गोबर एवं गंगाजी गोमूत्र में वास करने लगी।

यजुर्वेद का निम्न मंत्र निर्देश करता है कि जिस ब्रह्मविद्या द्वारा मनुष्य परमसुख को प्राप्त करता है उसकी सूर्य से उपमा दी जा सकती है। उसी प्रकार द्युलोक की समुद्र से तथा विस्तीर्ण पृथ्वी की इन्द्र से उपमा दी जा सकती है। किन्तु प्राणी मात्र के अनन्त उपकारों को अकेली सम्पन्न करने वाली गो की किसी से उपमा नहीं दी जा सकती। गो निरूपमा है, वास्तव में गौ के समान उपकारी जीव मनुष्य के लिये दूसरा कोई भी नहीं है :-

ब्रह्म सूर्यसमं ज्योतिर्द्यौः समुद्रा समँसरः।
इन्द्र पृथिव्यै वर्षीयान् गोस्तु मात्रा न विद्यते।।

(यजुर्वेद 23/48)

अतएव सभी मानवों को गोमाता की सेवा करने के लिये वेद भगवान का आदेश हुआ। जो व्यक्ति सब प्रकार से अपना कल्याण चाहता हो वह वेद भगवान के आदेश का पालन करे।

श्रुति-स्मृति के प्रमाणानुसार पूज्या गोमाता साक्षात सर्वदेव विग्रह है। पूज्या गोमाता की सेवा से, स्मरण से उनके सानिध्य से तथा पंचगव्य सेवन से मानव में देवत्व का अवतरण होता है, क्योकि पूज्या गोमाता सत्व का समुन्द्र है। मन वाणी तथा कर्म से गोमाता की सेवा करने वाला व्यक्ति पृथ्वी का साक्षात देवता हो जाता है। सत्व से ही देवत्व का निर्माण होता है। मानव का आहार शुद्ध ऊर्जावान एवं सत्व युक्त हो तो मानव देवकोटि प्राप्त कर सकता है। एक मात्र पूज्या गोमाता ही मानव जाति को ऐसा पवित्रतम ऊर्जावान दिव्य आहार प्रदान कर सकती है, जससे मानव तन, मन तथा मस्तिष्क से देवत्व को प्राप्त हो जाता है। पूज्या गोमाता में देवत्व निर्माण की अथाह शक्ति है, जिससे उनकी कृपा को ग्रहण करने वाले समस्त स्थूल एवं सूक्ष्म देहधारी प्राणियों को देव बना सकती है। पूज्या गोमाता की निष्ठापूर्वक सेवा, पूजा, आराधना करने वाले पवित्रात्मा मानव में अति इन्द्रिय ज्ञान प्राप्त करने की अद्‌भुत एवं अपार देवी शक्तियों का प्रादुर्भाव होता है। जो उसे अतिशय व अक्षय से रहित प्रतिक्षण वर्धमान रसानुभूती दिव्यलोक प्राप्ति तथा अमरत्व की उपलब्धी सहज में ही हो जाती है।

पूज्या गोमाता मानव जाति के तीनों तापों को शान्त करके अपनी कृपा कटाक्ष से उसे शुद्ध-बुद्ध मुक्त कर संसार का सिरमोर बना देती है। इस दृष्टि से देखा जाय तो पूज्या गोमाता सत्व की सृजक व जननी सिद्ध होती है। अतः पूज्या गोमाता में समस्त देवी शक्तियों समाहित है तथा वह अपने सेवक को पूर्ण देवत्व प्रदान करती है। इस भावना एवं विश्वास से हम सबको सुरभि की सन्तान गोमाता की सेवा पूजा, आराधना करनी चाहिये, जिससे यथेष्ट फल की प्राप्ति होकर जीवन कृतार्थ बने तथा व्यक्ति एवं विश्व में देवी शक्तियों का पूर्ण जागरण होगा।

पूज्या गोमाता तथा उनकी परा शक्तियों को कोटि-कोटि वन्दन।

जय गोमाता, जय गोपाल!

वेदों में गो महिमा

संकलित

सृष्टि के आरंभ से ही दो शक्तियों रही है - देवी शक्तियों और आसुरी शक्तियों। देवी शक्तियों प्रकृति पोषक है, जबकि आसुरी शक्तियों प्रकृति शोषक है। देवी शक्तियों मानव और समस्त प्राणियों का हित ही हित करती है। इन देवी शक्तियों को शक्ति गो से मिलती है। देवी शक्तियों के सर्जन और पोषण के लिए भगवान ने धरती पर गोमाता को भेजा है। इसलिए गोमाता की उपस्थिति से प्रकृति का संरक्षण और पोषण होता है। इसी कारण गोमाता की अनंत महिमा है। गोमाता सृष्टिकर्ता की एक अनुपम कृति है। जबसे मानव सभ्यता धरती पर आई, तब से ही गोमाता का उसके साथ अटूट संबंध रहा है। हम किसी भी काल का साहित्य पढ़ें, उसमें गोमाता के बारे में अवश्य ही कुछ न कुछ वर्णन मिलेगा ही।

गो मानव जाति की माता के समान उपकार करने वाली, दीर्घायु और निरोगता देने वाली है। यह अनेक प्रकार से प्राणिमात्र की सेवा कर उन्हें सुख पहुँचाती है। इसके उपकार से मनुष्य कभी उऋण नहीं हो सकता। यही कारण है कि सनातन संस्कृति में गाय को देवता और माता के सदृश्य समझ कर उसकी सेवा-शुश्रूषा करना अपना प्रधान धर्म समझा है और सदा ही उसके साथ ही जीवन जिया है।

सनातन संस्कृति का सबसे पुराना प्रमाण वेद है। वेदों में गोमाता की महिमा का बार-बार वर्णन आया है। वेदों में गो को कई नामों से उल्लेखित किया गया है- गो, अघ्न्या, धेनु, कामधेनु, अदिति आदि। अब आगे वेदों में गोमाता का दिग्दर्शन करते हैं:-

प्रेम की उपमा गाय का अपने वत्स के प्रति जो वात्सल्य भाव होता है उससे दी गई है। अर्थात् प्राणी जगत में किन्हीं दो प्राणियों के बीच सर्वाधिक प्रेम होता है वो गाय का अपने बछड़े से होता है। गोमाता प्रेम और वात्सल्य की सीमा है। गो की उपस्थिति से ही प्रकृति में प्रेम की अभिव्यक्ति होती है। जैसे-जैसे धरती पर गोमाता की संख्या घट रही है, प्राणियों में आपसी प्रेम भी कम होता जा रहा है और पूरे संसार में वैरभाव बढ़ रहा है। गो के प्रेम को वेद में इस प्रकार कहा गया है:-

वत्सं जातमिवाघ्न्या (अथर्ववेद- 3:30:1)

आपस में उसी प्रकार प्रेम करो, जैसे अघ्न्या (कभी न मारने योग्य गाय) अपने बछड़े से करती है। गाय और बछड़े के प्रेम का उदाहरण देकर मनुष्य को समझाया है कि आप भी आपस में इतने प्रेम से रहें।

धेनुं सदनं रयीणाम् (अथर्ववेद- 11:1:4)

गाय सभी ऐश्वर्यो का उद्गम है।

विमुच्यध्वमघ्न्या देवयाना अगन्म (यजुर्वेद-12:73)

अघ्न्या गाय और बैल तुम्हें समृद्धि प्रदान करते हैं।

घृतं दुहानामदितिं जनायाग्ने मा हिंसी: (यजुर्वेद-13:49)

सदा ही रक्षा के पात्र गाय और बैल को मत मार।

अन्तकाय गोघातं (यजुर्वेद-30:18)

गो हत्यारों का अंत हो।

वेदों में पशुओं की हत्या का विरोध तो है ही बल्कि गो की अनन्तान्त महिमा होने के कारण गो-हत्या पर तो तीव्र आपत्ति करते हुए उसे निषिद्ध माना गया है। यजुर्वेद में गाय को जीवनदायी पोषण दाता मानते हुए गो हत्या को पूर्णत वर्जित किया गया है। गोवंश को अघ्न्या कहा गया है। अघ्न्या का अर्थ होता है जिसे कभी भी किसी भी कारण और परिस्थिति में मारा न जाय।

देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्वमघ्न्या इन्द्राय भागं प्रजावतीरनमीवाँ अयक्ष्मा मावस्तेन ईशत माघशँ सो ध्रुवा अस्मिन्गोपतौ स्यात् । (शु. यजु. 1:1) हे गौओं! प्राणियों को सत्कार्यो में प्रवृत्त कराने वाले सवितादेव, आपको हरित शस्य संपन्न विस्तृत क्षेत्र की ओर ले जाय। हे गौओं! आप इन्द्र के क्षीर मूलक भाग को बढ़ावें अर्थात् अधिक

दूध देने वाली हों। आपकी कोई चोरी न कर सके, व्याघ्रादि हिंसक जीव भी आपको न मार सकें, क्योंकि आप तमोगुणी दुष्टों द्वारा मारे जाने योग्य नहीं हो। आप बहुत सन्तान उत्पन्न करने वाली हैं जिनसे संसार का बहुत कल्याण होता है। आप जहाँ रहती हैं वहाँ किसी भी प्रकार की व्याधि नहीं आ सकती! यहाँ तक कि यक्ष्मा (तपेदिक) आदि राजरोग भी आपके पास नहीं आ सकते। अतएव आप सर्वदा यजमान के घर में सुख पूर्वक निवास करें।

अन्धस्थान्धो वो भक्षीय महस्थ महो वो भक्षीयोर्जस्थोर्ज। वो भक्षीय रायस्पोषस्थ रायस्पोषं वो भक्षीय।। (शु. यजु. 3।20)

हे गौओं! आप अन्न को देने वाली हैं, अतः आपकी कृपा से हम अन्न को प्राप्त करें। आप पूजनीय हैं, आपके सेवन से हममें सात्विक उच्च भाव पैदा होते हैं। आप बल देने वाली हैं, हमें भी आप बल दें। आप धन को बढ़ाने वाली हैं अतः हमारे यहाँ भी धन की वृद्धि और शक्ति संचार करो।

सँहितेति सम्ऽहिता। असि। विश्वरूपीति विश्वऽरूपी। ऊर्जा। मा। आ। विश। गौपत्येन। उप। त्वा। अग्ने। दिवेदिव इति दिवेदिवे। दोषावस्तरिति दोषाऽवस्तः। धिया। वयम। नमः। भरन्तः। आ। इमसि। (शु. यजु. 3।22)

हे गौओं! तुम विश्वरूप वाली दुग्ध-घृत रूप ह्विदान के निमित्त यज्ञ कर्मो में संगति वाली हो। क्षीरादि रस द्वारा गो स्वामित्व में मुझमें सब प्रकार से प्रवेश करो। अर्थात् हमारा गो स्वामित्व अविचलित रक्खो। रात्रि में भी निरन्तर निवास करने वाले हे, अग्नि देवता! हम प्रतिदिन श्रद्धा-युक्त बुद्धि से तुमको नमस्कार करते हुए तुम्हारे प्रति प्राप्त होते हैं।'

इड एह्य दित एहि काम्या एत।मयि वःकामधरणं भूयात् ।(शु. यजु. 3। 27)

हे पृथ्वी रूप गौ! इस स्थान पर आओ। घृत द्वारा देवताओं को अदिति के सदृश पालन करने वाली अदिति रूप गौ! इस स्थान पर आगमन करो। गौओं! तुम सब साधनाओं को देने वाली होने के कारण सब की आदरणीय हो। हे गौओं! तुम इस स्थान पर आओ तुम्हारा जो अपेक्षित फल धारकत्व है सो मुझ अनुष्ठान करने वाले में तुम्हारी कृपा से हो, तुम्हारे प्रसाद से मैं अभीष्ट फल का धारण करने वाला हूँ।'

अपस्त्रमिन्दुमहष्भुंरण्युमाग्निमीडे षूर्वचितिं नमोभिः। स पर्वभिऋतुशः कल्पमानी गाँ मा हँम् सीरदितिं विराजताम्(शु. य. 13। 43)

क्षय रहित ऐश्वर्य से युक्त रोष रहित अथवा आराधना के योग्य पूर्व महर्षियों से चयन के योग्य अन्नों से सबके पोषण करने वाले अग्नि द्वारा स्तुति करता हूँ। वह अग्नि पर्व द्वारा प्रत्येक ऋतु में कर्मो का सम्पादन करता हुआ अखण्डित अदीन दुग्धान्न आदि से विराजमान दस ऐश्वर्य होने से गो विराट हैं अतएव गो को मत मारो।'

गो में माता ऋषभः पिता में दिवम् शर्म्म जगती में प्रतिष्ठा। (ऋग्वेद)

गाय मेरी माता, बैल मेरा पिता, यह दोनों मुझे स्वर्ग और ऐहिक सुख प्रदान करें। गौओं में मेरी प्रतिष्ठा हो।

यूयं गावो भेद कृशं चिदक्षीरं चि कृणुथा सुप्रतीकम्। भद्रं गृहं कृणुथ भद्रवाचो बृहदो वय उच्यते सभासु।। (अथर्ववेद)

गौओं के दूध से निर्बल मनुष्य बलवान और हृष्टपुष्ट होता है तथा फीका और निस्तेज मनुष्य तेजस्वी बनता है। गौओं से घर की शोभा बढ़ती है। गौओं का शब्द बहुत प्यारा लगता है।

वशां देवा उपजीवन्ति वशां मनुष्या उप। वशेदं सर्व भवतु यावतु सूर्यो विपश्यति। (अथर्ववेद)

देवता और मनुष्य गौ-उत्पादों पर निर्भर हैं। जब तक सूर्य चमकता रहेगा, ब्रह्मांड में गायें रहेंगी। संपूर्ण ब्रह्मांड गाय पर निर्भर है।........शेष अगले अंक में

ठाकुरजी कब आओगे

भारत की पवित्र भूमि पर चारों तरफ गोमाता हा-हाकार कर रही है। राजा और प्रजा सब दुष्टता पर उतर आये हैं। एक तरफ गोपालक गोवंश की उपेक्षा कर मारपीट कर उसे घर से निकाल रहे हैं। गायें रोती हुई अपने बछड़ों के सहित जंगल की ओर जा रही है। जाते-जाते पीछे मुड़कर कातर निगाहों से अपने घर को देख रही है और उसका हृदय भर आता है कि बिना कसूर उसे नन्हे बछड़े सहित घर से निकाल दिया है अब वो अपने बछड़े को लेकर कहाँ जायेगी? हिंसक जंगली जानवरों और कसाइयों से वह अपनी और बछड़े की रक्षा कैसे कर पायेगी? ऐसे दुःख में वह ठाकुरजी को पुकार रही है- ठाकुरजी कब आओगे, हमारी रक्षा करो, रक्षा करो।

दूसरी तरफ घरों से निकाला गोवंश निराश्रित हो गया। अपनी भूख-प्यास मिटाने जहाँ भी जाता है वहाँ उसे तिरस्कार और मार ही मिलती है। कई जगह भयंकर अकाल पड़ा है, चारा पानी के अभाव में लाखों की संख्याा में गोवंश तडप-तड़प कर अकाल मृत्यु को प्राप्त हो रहा है।

तीसरी तरफ कसाई ट्रकों में बोरियों की तरह भर-भर कर गोवंश को कत्लखाने ले जा रहे हैं जहाँ निर्दयतापूर्वक उसके जीवित शरीर से चमड़ी उधेड़ रहे हैं, गला काटकर रक्त के ड्रम भर रहे हैं। इन दुष्टों के चंगुल में फंसी गोमाता पुकार कर रही है- ठाकुरजी कब आओगे, हमारी रक्षा करो, रक्षा करो।

चौथे दृश्य में कुछ मुट्ठीभर गोरक्षक इन कसाइयों के ट्रकों को रोकने का प्रयास करते हैं। कसाई और राजतंत्र मिलकर गोरक्षकों को मारते-पीटते हैं और पकड़कर जेलों में ठूंस देते हैं। ये गोरक्षक भी पुकार करते हैं- ठाकुरजी कब आओगे, गोमाता की रक्षा करो, रक्षा करो।

पांचवे दृश्य में कुछ गोभक्त संत और श्रद्धावान लोग मिलकर निराश्रित गोवंश को गोचर पर एकत्रित कर उनकी सेवा में जुट जाते हैं। कुछ दिन बाद गाँव के लोग राजतंत्र के साथ मिलकर उनकी सेवा व्यवस्था को बिखेर देते हैं, गायों और गोसेवकों के साथ मारपीट कर उनको भगा देते हैं तथा संतों और श्रद्धावान लोगों को धमकाते हैं कि दुबारा यहाँ गोसेवा की तो जेल भिजवा देंगे, तुम्हारे बाप की जमीन नहीं है यह। ये गायें, गोसेवक और गोभक्त ठाकुरजी को पुकारते हैं।

गो की महिमा अपरम्पार है। गोस्तु मात्रा न विद्यते- गाय के समान संसार में कोई नहीं हो सकता। गाय के गुण और उससे मिलने वाले लाभों की तुलना किसी अन्य जीव से नहीं की जा सकती है। गाय अतुलनीय एवं अनुपम है और उसके योगदान की कोई सीमा या मात्रा नहीं होती है। अर्थात गाय से मिलने वाले लाभ असीमित है। गावो विश्वस्य मातरः- गाय ही विश्व की माँ है, गोषु लोकाः प्रतिष्ठिताः- गाय में ही समस्त लोक प्रतिष्ठित हैं, मातरः सर्वभूतानां- गाय सभी भूतों की माँ है, भूतभव्यस्य मातरम्- गाय ही भूत और भविष्य की माँ है। अमृतस्य नाभि- गाय अमृत की नाभि है। गाय जीवनी शक्ति का स्रोत है। गाय अखिल ब्रह्माण्ड में व्याप्त विष का शमन करने का यंत्र या औषधि है। गाय देव एवं ऋषि प्राणों की पोषक है। गाय धर्म की अधिष्ठात्री है। जब गोमाता और उसके वंश की इतनी महिमा हैं तो फिर मनुष्य उसकी सेवा की बजाय उससे विमुख क्यों हो गया, उसका दुश्मन कैसे हो गया?

मनुष्य के मन-बुद्धि जब उल्टे हो जाते हैं तब उसे सही बात गलत और गलत बात सही लगने लगती है। मन-बुद्धि उल्टे होने में तामसिक और अभक्ष्य भक्षण शराब मांस आदि मुख्य हेतु है। भारत की आम जनता समान्यतया शाकाहारी थी और सभी

गोपालक थे। शुद्ध अन्न, फल, सब्जी और गोगव्य ही उनका आहार था। भारत में गाय को अघ्न्या (जिसका वध न किया जाय) माना गया है। लेकिन 8 वी शताब्दी से विदेशी आक्रान्ता भारत में आये और यहाँ अपना शासन जमा लिया। वे लोग आसुरी प्रवृति वाले थे और जीवों को मारकर खाना ही उनका आहार था। वे लोग गोहत्या भी करने लगे। कुछ भारतीय भी कसाई के रूप में उनके साथ काम करने लगे।

इनके बाद 17 वी शताब्दी से भारत देश में अंग्रेज आये। वे भी आसुरी प्रवृति के थे और गोमांस भक्षी थे। अंग्रेजों ने यहाँ यांत्रिक कत्लखाने खोले, कई भारतीय उसमें कसाई का रोजगार करने लगे। कई हिन्दू कत्लखानों को गोवंश ले जाकर देने लगे। अंग्रेजों के संग से कई हिन्दू भी गोमांस खाने लगे। जब अंग्रेजों को यह बात समझ में आई कि हिन्दुओं को पूर्ण अधिन करना है तो इनकी संस्कृति और धर्म को नष्ट करना होगा। हिन्दुओं की संस्कृति और धर्म का आधार गोमाता है। तो उन्होंने हिन्दुओं को किसी भी षड़यंत्र से गोमांस खिलाने का निश्चय किया। अंग्रेजों का सोचना था कि गोमांस खाने से हिन्दू अपने धर्म से पतित हो जायेगा और वो भी गाय का विरोधी हो जायेगा।

पहला षड़यंत्र 1857 में कारतूसों में गोमांस लगाकर किया। जिसका पर्दाफाश हो गया और कुछ हिन्दू सैनिकों ने अंग्रेजों के विरुद्ध बगावत कर दी और यह बगावत देशभर में गोवध के खिलाफ एक बड़े आंदोलन के रूप में हुई। उसको अंग्रेजों ने धीरे-धीरे कुछ ही समय में कुचल दिया। लेकिन इसकी एक चिनगारी पंजाब में सुलगी और 1870 के आसपास सिखों के कुका पंथ ने गोहत्या के विरूद्ध एक बड़ा आंदोलन किया। उसे भी आसुरी सत्ता ने कुचल दिया। यह आसुरी ताकतें अब गोहत्या को और अधिक निर्भय होकर निर्विध्न रूप से करने लगे। 1947 में भारत से अंग्रेजों की सत्ता छिन गई, वे यहाँ से चले गये लेकिन जाने से पहले देश में विभिन्न तरीकों से करोड़ों गोमांसभक्षी, गोविरोधी लोग तैयार करके गये। गोरे अंग्रेज चले गये, अब काले अंग्रेज गोहत्या करने लगे। बात यहीं तक नहीं रुकी, काले अंग्रेज तो धन के लालच में गोमांस का निर्यात भी करने लगे।

एक बार फिर हिन्दुओं में गोहत्या के विरूद्ध आक्रोश फैलने लगा। 1966 में यह चरम पर पहुँचा। 7 नवम्बर 1966 को गोपाष्टमी के दिन भारत देश के शंकराचार्यों, साधु-संतों, विभिन्न हिन्दु संगठनों, गोभक्तों और लाखों की संख्या में आम जनता ने दिल्ली में एक बड़ा आंदोलन किया और संसद का घेराव किया। राजतंत्र ने निहत्थे शंकराचार्यों, साधु -संतों, गोभक्तों और आम लोगों पर गोलियों की बौछार कर दी। हजारों की संख्या में गोभक्त आंदोलनकारी साधु-संत, गोभक्त और आमजन मारे गये, दिल्ली की सड़कें और गलियें गोभक्तों के रक्त से लाल हो गई और इस गोरक्षा आंदोलन को तात्कालिक सरकार द्वारा बलपूर्वक नष्ट कर दिया।

इसके बाद भारत में गोहत्या के विरोध में बोलने वाली आवाजें कुछ समय के लिये दब गई और गाय को बिना किसी रूकावट के मानवाकार दानव मारने लगे, खाने लगे और उसकी माटी व रक्त का व्यापार करने लगे। सरकार ने गोहत्या को व्यापार और बोट बैंक बना दिया। जो गोभक्त जीवित रह गये, मगर अब कुछ कर नहीं पा रहे थे वे देश में गोवंश पर हो रहे अत्याचारों को देख-सुनकर बहुत करूण पुकार करते हैं- हे ठाकुरजी तुम कब आओगे? दुष्ट आपकी प्यारी दुलारी गैया को मार रहे हैं। हम अब असहाय हैं, हमारा कोई वश नहीं चल रहा है। ठाकुरजी क्या नहीं कर सकते? एक पलक झपकते ही ब्रह्माण्ड को उलट-पुलट कर दे। उनको कहीं आना जाना नहीं पड़ता है।.....शेष अगले अंक में

श्रीमद् भागवत कथा

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

पिछले अंक से आगे.....यह बात सुनकर बड़ी पीड़ा हुई हमारे मन में कि कंपनियों वालों ने 26000 करोड़ सी.एस.आर. में खर्च किया उसके भी वास्तविक स्वरूप को इन्होंने बताया कि 100 रुपये देंगे तो कहेंगे 5 तुम रख लो या 10 रख लो । 95 या 90 हमको दे दो ऐसा भी कुछ लोग करने वाले हैं और उसमें भी आपने बताया कि यदि देशी गोवंश के लिए विचार किया जाए कि कितना कंपनियों के द्वारा गोसेवा में आया तो इतने बड़े देश में मात्र 12 करोड़ रुपए। इससे बड़ी लज्जा की और क्या बात हो सकती है। कितने सी.ए. यहां होंगे? हम ज्यादा तो लोगों को पहचानते नहीं हैं? कौन-कौन सी.ए. हैं? पर सज्जन रामदास जी भी सी.ए. हैं, अचिंत्य जी भी सी.ए. हैं, कैलाश जी भी सी.ए. हैं, कैलाश जी की पुत्रवधू सामने बैठी है यह भी सी.ए. हैं, उनके पुत्र भी सी.ए. हैं, इधर वे हाथ जोड़ रहे हैं ऐसे बड़े कुशल हैं सी.ए.। क्या नाम है? बालकृष्ण जी भी सी.ए. हैं, श्री चांडक जी के आने की बात थी वे आए नहीं, वह भी सी.ए. है।

तो इतने सी.ए. की जमात एक हिसाब से इकट्ठे किया जाए तो जड़खोर गोधाम के सी.ए. की जमात हो जाएगी। इतनी बड़ी जमात है तो अब सब जितने भी सी.ए. हैं जो यहाँ बैठे हैं वे और जो दूर-दूर तक सुन रहे हैं वे उन सबको इस लज्जाजनक पक्ष को सम्मानजनक पक्ष के रूप में परिवर्तित करने का प्रयत्न करना चाहिए कि 12 करोड़ नहीं वस्तुत: धन का सर्वोत्तम विनियोग गोसेवा में है इसका कारण यह है कि संपूर्ण प्रकृति पर्यावरण की रक्षा, सुरक्षा, धर्म की सदाचार की रक्षा सुरक्षा वह गोवंश की रक्षा सुरक्षा से ही संबंध है। इसलिए जितने भी उपकार के काम है, सेवा के कार्य हैं उन सब कार्यो में प्रधान गोसेवा करना है। हमको तो आज सुनकर ऐसा लगा कि जिनको भगवान ने यह सामर्थ्य दिया है और दूसरी बात यह है कि उतना खर्च उनको करना ही है, हम यह नहीं कहते कि वह चिकित्सालय, शिक्षा में खर्च न करें लेकिन जितना चिकित्सा, शिक्षा में खर्च कर रहे हैं उतना तो कम से कम गोसेवा में करें। उतना नहीं हो तो उससे आधा भी करें तो बहुत बड़ा परिणाम राष्ट्र के सामने समझ में आयेगा, दिखाई पड़ेगा। गुरुकुल में भी कर सकते हैं। शिक्षा में करना है तो मूल भारतीय सनातन संस्कृति के सजग प्रहरी जहाँ तैयार किये जा रहे हैं ऐसी गुरुकुल प्रणाली की जो शिक्षा पद्धति है, प्राचीन गुरुकुल प्रणाली जिसमें षड़ंग वेद के स्वाध्याय की व्यवस्था है उनमें यदि वे खर्च करें तो कितना पुण्य उनको प्राप्त होगा। तो निश्चित इस बात के लिए आपने प्रेरित किया बहुत अच्छी बात लगी।

सच्ची बात यह है कि सूरत वासियों को तो बहुत सावधान करने की जरूरत है। उसका कारण यह है कि केवल जड़खोर गोधाम की ही सेवा नहीं, हम ऐसा अनुभव करते हैं कि सूरतवासी पूरे देश में जितनी पवित्र आध्यात्मिक धार्मिक संस्थाएं हैं सभी के महानुभाव प्राय: यहां आते हैं और सभी जगह यहाँ के लोग सेवा करते हैं। तो निश्चित ही यह बहुत बड़ी बात है और हम बिना किसी संकोच के सबको एक बात कहते रहते हैं और पुन: कह रहे हैं कि सेवा आपका सौभाग्य है पर व्यक्तिगत हम चाहे जड़खोर गोधाम हो या अन्य मलूकपीठ से जुड़े हुए सेवा के प्रकल्प हों, हम यही निवेदन करते हैं कि आप सब उतनी ही सेवा करें जितनी सेवा से आपके ऊपर कोई अधिक भार, अतिरिक्त भार ना आवे। आप अपने माता-पिता, परिवार और अपने व्यापार को ठीक से देखते हुए उससे जो आपकी पवित्र नई उपार्जित कमाई है उसका एक अंश गोसेवा, ठाकुर सेवा, संत

सेवा में व्यय करें, अच्छे कार्यों में व्यय करें। क्योंकि यह बात बिल्कुल पक्की है कि ये जो पवित्र कार्य है वे किसी मनुष्य के कार्य नहीं है, ये भगवान के कार्य हैं और भगवान अपने कार्य स्वयं ही कृपा करके हमसे करवा रहे हैं। भगवान के कार्य हैं तो भगवान को ही करना है, यदि हम सोचें कि हम निमित्त हैं या कोई व्यक्ति निमित्त है तो निमित्त मानना भी मिथ्या दम ही है, मिथ्याचारी है। भगवान ने कृपा करके हमको गो से जोड़ रखा है यह भगवान का अनुग्रह है। हमारा नाम गाय से जुड़ गया, हमारा नाम सेवा से जुड़ गया यह हमारे लिए सौभाग्य की बात है।

हमारे गोपाल जी बैठे हैं गोपाल दास जी जो जड़खोर गोधाम के समर्पित गोभक्त तो है ही मलूक पीठ के समर्पित शरणागत हैं और जो श्री भगवान नाम मंदिर स्थापित है, भगवान राम बैंक स्थापित है उस बैंक की स्थापना और उस दिशा में निरंतर चिंतनशील, क्रियाशील बने रहते हैं। अभी थोड़ा बीच में शरीर अस्वस्थ हो गया था लेकिन अब आपके दर्शन करके मन हमारा भी प्रसन्न है कि चलो अब बहुत बढ़िया हो गया आप पुनः सेवा में उपस्थित हो गये हैं। अब राम नाम मंदिर वाले काम में कमर कस के जल्दी लग जाइए। आपका मनोभाव हुआ है कि हम अयोध्या जी में और एक मलूकपीठ में राम नाम भगवान का जहाँ राम मंदिर है वहाँ स्थापित करें।

राम जी तो विराजे हैं। **ब्रह्म राम तें नामु बड़ बर दायक बर दानि। रामचरित सत कोटि महँ लिय महेस जियँ जानि।।** इसका अर्थ है कि राम नाम, ब्रह्म और स्वयं राम से भी महान है। यह वरदान देने वालों को भी वर देने वाला है। शिवजी ने अपने हृदय में यह जानकर ही सौ करोड़ रामचरित (राम के चरित्र) में से इस 'राम' नाम को ग्रहण किया है। तो राम ब्रह्म का मंदिर तो बना ही है, नाम ब्रह्म का भी मंदिर बनना चाहिए और भव्यतिभव्य रूप में बनना चाहिए ऐसा भाव आपके मन में जगा है। बहुत से लोगों को आपने जोड़ा है और उस पवित्र कार्य के लिए हमारे गाड़ोलिया जी ने जो हमारे परम श्रद्धेय गुरु स्वरूप, सद्गुरु स्वरूप पूज्यपाद आचार्य श्री कृपा शंकर जी की कृपाभाजन है, उन्होंने 500 गज भूमि अयोध्या जी में अपने भगवन्नाम मंदिर के लिए प्रदान की है।

अभी उसमें यह भी विचार चल रहा है कि उसको ऐसी जगह बनाया जाए कि जहाँ बहुत भव्यता और दिव्यता के सहित वह आवे तो उसकी भी जैसी रघुनाथजी की भावना संकल्प होगी उसका भी प्रयास हमारे गंगादास जी उसे प्रयास में लगे हुए हैं कि कितना बढ़िया काम सोच रहे हैं तो वह ऐसी फ्रंट जगह पर हो कि जहाँ प्रत्येक अयोध्या जाने वाले व्यक्ति को कम से कम वहाँ का दर्शन हो। आजकल की भाषा में क्या कहते हैं– लोकेशन बोलते हैं क्या बोलते हैं? उसकी लोकेशन बहुत अच्छी होनी चाहिए ऐसा हमारे सुनने में आ रहा है। तो रघुनाथ जी चाहेंगे और यह उनका संकल्प होगा तो वह कार्य भी हो जाएगा।

आज आरंभ का दिवस था इसलिए थोड़ा विलंब भी हुआ। कल से आपको सत्संग श्रवण करने का सौभाग्य प्रतिदिन मिलेगा ही। थोड़ा क्रम चल रहा है तुलसी ग्रन्थावली का। आज विलंब हो गया तो थोड़ा नियम की पूर्ति हम कर लेते हैं। शर्मा जी रामचरितमानस का जो पिछले से पिछले चातुर्मास से मलूक पीठ में आरंभ हुआ था तो उसमें अयोध्या कांड का आरंभ हुआ था। वहाँ तक 3 महीने में कथा हुई इसके बाद पिछली बार पथमेड़ा के नंदगांव में भरत चरित्र हुआ। बीच में हमको पूज्य रेवासा महाराज जी के अकस्मात निकुंज प्रविष्ट होने के कारण हमें रेवासा धाम आना पड़ा और वहाँ से भी प्रतिदिन भरत चरित्र की चर्चा हुई। वहाँ अयोध्या कांड नंदगांव में संपन्न हुआ। इस बार कुंभ में 10 जनवरी से ही मानस जी की क्रमिक कथा के क्रम में अरण्यकांड का शुभारंभ होगा......शेष अगले अंक में

भक्त चरित्र

श्री छोटे सरकार जी का चरित्र

(पू. मलूकपीठाधीश्वर महंत श्री राजेन्द्रदासजी महाराज)

देश की एक विशिष्टतम विभूति का आप लोगों ने नाम सुना होगा। नर्मदा खंड के महान सिद्ध संत श्री धूनी वाले दादाजी। खंडवा में जिनकी धूनी है। मध्य प्रदेश के खंडवा में आज भी अखंड धूनी जल रही है और बड़े-बड़े विलक्षण उनके जीवन के प्रसंग हैं। धूनी वाले दादाजी को साक्षात शिव रूप में ही लोगों ने अनुभव किया।

उनके बाद उनके द्वितीय परंपरा में आचार्य श्री हरिहर भोले भगवानजी थे। वे भी अद्‌भुत सिद्ध महापुरुष थे और फिर उनकी तीसरी परंपरा में हरिहर भोले भगवान जी के शिष्य हुए श्री बड़े सरकार। श्री बड़े सरकार भी ऐसे ही अद्‌भुत महापुरुष थे। भैया जी खंडवा में सर्वे सर्वा वे ही थे। लेकिन थोड़ा सा उनको सुनने में आया कि लोगों ने यहाँ कोई ट्रस्ट बना रखा है, उनके मन में कोई दूसरा भाव है। 'पूर्व-पश्चिम, उत्तर-दक्षिण चारों दिशा जागीरी में, यार मेरो मन लाग्यो फकीरी में' और सहज ही में वे वहाँ से उठकर चल दिये तथा इंदौर में जहाँ आजकल दादा दरबार है वहाँ जाकर बैठ गए खुले मैदान में, वहीं पास में श्मशान था, वहीं बैठ गये और 18 वर्षो तक एक ही जगह बैठे रहे। विलक्षण बात यह थी कि 18 वर्षो में ना कुछ खाया ना कुछ पिया वहीं बैठे रहे। विज्ञान की दृष्टि से तो संभव ही नहीं के शरीर बिना अन्न जल के 18 साल रह जाए। धूनी भी की उन्होंने 18 वर्ष तक वहाँ, तो खुले में 18 वर्ष धूनी भी प्रज्वलित रहना संभव नहीं है।

लोग आते, कपड़ा लाये धूनी में डाल दिया, मिठाई लाये धूनी में डाल दिया, फल लाये धूनी में डाल दिया, पुष्प लाये धूनी में डाल दिया। सब कुछ धूनी को अर्पित करते रहते थें। भयंकर गर्मी होती तो एक गोमाता आकर उनके ऊपर खड़ी हो जाती चारों पैर करके। उसको कहते थे जीजा माई, जीजा माता। क्या उनका भाव था? जीजा महारानी कहते थे उस गाय को। वो गाय मनुष्य की भाषा में बात करती थी। जैसे हम बोल रहे हैं, ऐसे बोलती थी और लोगों की कामनाएं गाय से पूरी होने लग गई। अब सट्टे वाले लोग सट्टे का नंबर पूछने लग गए- जीजा महारानी गोमाता हमारा नंबर बताओ। बाबा को पता चला बोले कलयुग है, ज्ञान, भक्ति, बैराग्य कोई मांगेगा नहीं, तुम्हें परेशान करेंगे, तुम मौन हो जाओ। गऊ मौन हो गई।

आज जो श्री छोटे सरकार हैं ये भी पूर्व जन्मके बड़े सरकार के शिष्य ही हैं। इनके भी जीवन का बड़ा विलक्षण प्रसंग हैं। वे सामने आयेंगे तो बोलने में बड़ी कठिनाई होगी इसलिये अभी संक्षेप में बोल देते हैं। श्री बड़े सरकार वहाँ खेड़ी घाटमें नर्मदा किनारे विराजते थे और दादा दरबार यहाँ इंदौर में विराजते थे। फक्कड़ थे, अवधूत थे तो वे चिल्लम पीते थे। कोई विद्वान आ जाय, कोई बहुत बड़े मण्डलेश्वर आ जाय, बड़े न्याय व्याकरण वेदांत आदि के पंडित आ जाएं तो कहते- इनको भेंट विदाई करो, भेज दो इनको। अपने तो बिना पढ़े-लिखे हैं। अपने जरूरत नहीं है इनकी। सीधे-साधे, भोले-भाले निश्चल निष्कपट व्यक्तियों की आवश्यकता है। कभी-कभी कहते मान बड़ाई से मन नहीं भरा, धन और स्त्री के प्रति आकर्षण समाप्त नहीं हुआ, पढ़ने-लिखने से क्या होता है? जाओ जाओ! विद्वान है इनका सत्कार करो, विदा कर दो इनको और ऐसे उटपटांग वेश वाले फक्कड़ बाबा आ जाते तो उनको जाने नहीं देते। कहते कि ये तो गाली बकते हैं, ऐसे हैं तो बोलते कि ये एकदम सच्चे साधु हैं, इनमें छलकपट है ही नहीं। हमें तो ऐसे ही लोगों की जरूरत है। कभी-कभी कहते कि यह सब भोले बाबा की फौज है। रूद्रगण हैं सब। कोउ मुख हीन, विपुल मुख काहू- कोई बिना मुख का है तो किसी के

बहुत से मुख है। इसलिये हमको ऐसे ही लोग अच्छे लगते हैं।

श्री बड़े सरकार गुरुजी चिलम पीते थे। ये जो आज श्री छोटे सरकार हैं ये उस जन्म में श्री बड़े सरकार के विरक्त शिष्य थे जो श्री बड़े सरकार की सेवा में थे जो उनको चिलम पिलाया करते थे। इन शिष्य की टांगे कमजोर थी, कमर के नीचे के भाग से अपाहिज होने के कारण लोग उन्हें गोद में उठाकर गुरु महाराज जी के पास ले जाते थे। वे कुछ दूर ही उतर कर खुद को घसीट के श्री बड़े सरकार के पास जाते और सर झुका कर उन्हें चिलम पिलाया करते आदर पूर्वक। वे कभी अपने गुरु का चेहरा नहीं देखते थे। चिलम लेने के बाद श्री बड़े सरकार कहते कुछ सुनाओ। फिर यह शिष्य उन्हें तुलसीदासजी, सूरदासजी, मीराजी, रैदासजी, मलूकदासजी, कबीरदासजी, गुरु नानकदेवजी आदि के पद सुनाते। पद सुनकर श्री बड़े सरकार के अश्रुधारा बहती।

एक दिन चिलम पीते हुए पता नहीं श्री बड़े सरकार के मन में क्या आया कि उन्होंने अपने इस अपाहिज शिष्य (वर्तमान के श्री छोटे सरकार) से कहा 'क्यों रगड़ता है? दिल्ली जा, दिल्ली दरबार तुझे दे दिया, चले जा। शिष्य ने अपने गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए एक भक्त से कहा कि उन्हें दिल्ली की रेलगाडी मे बैठा दें। इंदौर से वह छोटी लाइन में रतलाम तक गये और रतलाम में एक कुली से बोले कि हमें दिल्ली की बड़ी लाइन की रेलगाडी में बैठा दो। चूंकि वह अपाहिज थे किसी ने ना तो उनसे टिकट के लिए पूछा और ना ही उनके पास पैसे थे।

जब रेल गाड़ी दिल्ली पहुंची और सारे डिब्बे खाली हो गये तो किसी कुली ने उनको अकेला बैठा देखकर पूछा 'बाबा आप यहाँ क्यों बैठे हो?'। गुरु महाराज जी बोले 'हमें दिल्ली जाना है', तो कुली ने बोला 'बाबा दिल्ली तो आ गई है और यहाँ से रेल गाड़ी यार्ड को जा रही है आपको यहीं पर उतार दूं? कुली ने उन्हें प्लेटफार्म पर उतार दिया और वहीं पर गुरु महाराज ने बैठे-बैठे दादा नाम शुरू कर दिया। कुछ समय पश्चात कुली ने जब गुरु महाराज जी को उसी स्थान पर बैठे देखा तो वह उनके पास गया और बोला 'बाबा तुम यहीं पर बैठे हो, तुम्हें कहाँ जाना है'? गुरु महाराज जी ने कहा कि मुझे दिल्ली जाना है। कुली बोला कि दिल्ली तो यही है और कौन सी दिल्ली होती है, चलो मैं तुम्हें बाहर ले जाता हूँ, रिक्शा में बिठा देता हूँ, यह कहकर गुरु महाराज जी को उठाकर उसने पुरानी दिल्ली के स्टेशन के बाहर बैठ दिया और फिर से पूछा कि बताओ तुम्हें कहां जाना है? गुरु महाराज जी ने कहा 'मुझे तो पता नहीं, मेरे गुरु ने मुझे कहा कि दिल्ली चले जाओ तो मैं यहाँ आ गया।' कुली फिर चिढ़ते हुए बोला कि अरे दिल्ली में कहाँ जाना है यह तो बताओ ताकि मैं रिक्शा करा सकूं। गुरु महाराज जी ने कहा 'मुझे तो नहीं पता' तो कुली बड़बड़ाता हुआ गुरु महाराज जी को वहीं पर अकेला छोड़कर चला गया।

वहाँ बबन नाम का एक व्यक्ति रेड़ी पर ठंडी मीठी गनेरी (गन्ना) बेचा करता था। उसने जब देखा कि दोपहर से शाम हो गई और यह बाबा तो कहीं जा ही नहीं रहा है तो उसने गुरु महाराज जी से पूछा कि बाबा तुम्हें कहाँ जाना है? गुरु महाराज जी ने कहा कि मुझे तो पता नहीं, मेरे गुरु ने मुझे बोला कि दिल्ली चले जाओ तो मैं दिल्ली आ गया। बबन ने गुरु महाराज जी को अकेला और अपाहिज देख कर अपनी कुछ गनेरियाँ खिला दीं और फिर अपने काम में लग गया। वो गनेरी बेचने के लिये आवाज लगाता कि ठण्डी मीठी गनेरी ले लो, तो बाबाजी भी साथ में आवाज लगाने लगे। इस तरह बाबा के आवाज लगाने से आज उसकी गनेरियों जल्दी बिक गई। जब घर जाने का समय हुआ तो उसने फिर से गुरु महाराज से पूछा बाबा क्या आपको कोई लेने आने वाला है? गुरु महाराज बोले मुझे तो पता नहीं, तब बबन ने कहा आप मेरे ठेले पर बैठ जाओ मैं आपको अपने घर ले जाता हूँ। बाबा को अकेला देखकर

अपने साथ अपने घर ले आया।

घर पहुँचने के पश्चात अपनी घरवाली का बनाया हुआ भोजन उसने स्वयं भी खाया और गुरु महाराज जी को भी खिलाया और घर के बाहर टाट बांधकर बाबा को एक छोटी सी जगह पर बैठा दिया। श्री गुरु महाराज जी दादा के नाम का भजन करने लगे। पूरी रातभर वे संतों के पद गाते रहे। प्रातः काल बबन ने स्वयं स्नान करने के पूर्व श्री गुरु महाराज जी को भी स्नान कराया। चूँकि वह एक अनजान व्यक्ति को अपने घर में अकेला नहीं छोड़ना चाहता था, उसने गुरु महाराज जी से पूछा कि 'बाबा मैं गनेरी बेचने जा रहा हूँ, आपको कहाँ छोड़ दूं? गुरु महाराज जी ने फिर दोहराया कि मुझे नहीं पता, तब वह गुरु महाराज को ठेले पर बैठा कर अपने साथ ले गया।

गुरु महाराज जी उसके साथ उसकी गनेरियाँ बेचने लग गए। कभी गुरु महाराज जी गनेरी छीलते और बबन बेचता तो कभी वह छीलता और गुरु महाराज जी बेचते। वह जोर-जोर से बोलता कि 'मीठी ठंडी गनेरी ले लो' तो गुरु महाराज जी भी वही दोहराते। उस दिन उसकी गनेरियाँ दुगनी बिक गयी। ऐसे करते-करते दो-तीन दिवस बीत गए। इस दौरान बबन को गुरु महाराज जी पर विश्वास हो गया कि ये तो कोई संत महापुरुष हैं और उन्हें घर में छोड़ कर अकेले गनेरी बेचने लगा।

हर रात्रि शयन में जाने से पूर्व श्री गुरु महाराज जी बहुत देर तक भजन गाया करते थे और धीरे-धीरे जहाँ तक गुरूजी की आवाज पहुँचती वहाँ के लोग इनका भजन सुनने के लिए खींचे चले आते। शीघ्र ही भजन सुनने वालों की संख्या बढ़ती गई और वह गुरु महाराज जी के भक्त बनते चले गए। जब भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होने लगीं तब उनका गुरु महाराज जी में विश्वास और दृढ होने लगा।

एक दिन अमावस को बबन ने कहा कि गुरु महाराज आज यमुना किनारे एक मेला भरेगा, हम आज वहाँ गनेरियाँ बेचने जायेंगे, आप चलोगे क्या? गुरु महाराज जी कहा हाँ हम भी चलेंगे और यमुना नदी में स्नान करने की इच्छा है। बबन ने उन्हें अपने गनेरियाँ के ठेले पर बिठाया और वहाँ ले गया। स्नान करने के पश्चात दोनों दिनभर गनेरियाँ बेचते रहे। आज उसकी गनेरियाँ बहुत जल्दी बिक गई। बबन जब घर को रवाना हुआ तो गुरु महाराज जी को बोला चलो बाबाजी अब घर चलते हैं। तो बाबाजी बोले आप जाओ, हमें तो अपना स्थान मिल गया है। बबन ने बहुत निवेदन किया चलने के लिये तो बबन से जाने के लिए कहा और बोले आते जाते रहना। फिर वे वहीं पर भजन करने लगे और उसी स्थान पर आज दिल्ली दरबार स्थापित है।

बाबाजी खुले आसमान में यमुनाजी के किनारे भजन करते। कोई कुछ लाकर देता तो पा लेते। गृहस्थों का तो स्वभाव होता है बाबा को देखा और उनसे कुछ न कुछ मांगने लग जाते हैं। तो इनके पास भी लोग आने लगे। जहाँ बैठते थे वहाँ थोड़ा गड्ढा था। कोई अपनी समस्या बताता तो उसे कहते एक तगारी रेत लाकर इस गड्ढे में डाल दो और राम राम करो, आपकी समस्या हल हो जायेगी। कोई अपनी बीमारी के मिटाने हेतु निवेदन करता तो उसे गले में पड़ी माला में से फूल की पंखुड़ियों तौड़कर दे देते और कहते इसे खा लो, ठीक हो जाओगे। लोग ठीक होने लगे। गुरुजी के भक्तों में कई पुलिस वाले भी थे जो निलंबित हो गये थे। वे गुरुजी के पास आए, गुरुजी उनको भी गड्ढा भरने हेतु कहा और ऐसा करने से सब बहाल हो गये।

यह बात लोगों के बीच आग की तरह फैल गयी कि कोई चमत्कारी बाबा हैं जो बिगड़े काम बना देते हैं। इस प्रकार भक्तों की संख्या और अधिक हो गयी। इन्ही भक्तों में भारत के पहले राष्ट्रपति डॉ राजेंद्र प्रसाद जी की बहन भी थी। उसने एक दिन गुरु महाराज को बतलाया कि उसके भाई दमा के मरीज होने के कारण बहुत परेशान रहते हैं। गुरु महाराज जी ने उसे एक फूल पत्ति दी और कहा इसे

अपने भैया को खिला दो। राजेंद्र प्रसाद जी की बहन ने अपने भैया को ले जाकर के प्रसाद दिया और गुरु महाराज जी के बारे मे बतलाया। पहले तो डॉ राजेन्द्र प्रसाद जी ने कहा कि ऐसे तो बहुत बाबा घूमते रहते हैं, तू भी कितनी भोली है। जो दवाई से और बड़े-बड़े डाक्टर ठीक नहीं कर सके वो क्या इन फूल पत्तियों से ठीक हो जायेगा? लेकिन बहन द्वारा ज्यादा आग्रह करने पर उन्होंने वो प्रसाद खा लिया। वो प्रसाद खाते ही डॉक्टर राजेंद्र प्रसाद जी को आराम मिल गया। वे यह सब देख आश्चर्य में पड़ गये और बाबा से मिलने का मन हो गया कि ऐसे चमत्कारी बाबा कौन है?

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी ने अपनी बहन को कहा कि बाबा को यहाँ बुला कर लाओ, हम दर्शन करना चाहते हैं। उनकी बहन गुरु महाराज जी के पास गयीं और उनसे अनुग्रह किया कि उनके भाई सरकारी बंधनो के कारण दर्शन के लिए यहाँ नहीं आ सकते इसलिये गुरु महाराज उनके साथ राष्ट्रपति भवन चलें। गुरु महाराज ने कहा- जिसको काम हो वो आये यहाँ। हमें तो किसी से कोई काम नहीं है। हम तो यहाँ खुले आसमान के नीचे दादाकी शरण में मस्त हैं। बहन ने जाकर राष्ट्रपति जी को यह बात बताई तो उनहोंने कहा हम स्वयं जायेंगे बाबा के दर्शन हेतु।

प्रशासन को यह सूचना भेज दी गई कि महामहिम राष्ट्रपति अमुक स्थान पर बैठे बाबा के दर्शन हेतु जायेंगे। प्रशासन ने तैयारी आरम्भ कर दी। वहाँ बाबा को भूमि आवंटित कर दी, उसके चार दीवारी बना दी। अन्दर व्यवस्थित बगीचा आदि बना दिये। बाबा के लिये कुटिया बना दी। सब व्यवस्थाएं कर राष्ट्रपति भवन सूचना भिजवा दी। फिर डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी बाबा के दर्शन करने गये। इस प्रकार अपने गुरु श्री बड़े सरकार की आज्ञा पालन से वहाँ दिल्ली में भी दादा दरबार स्थापित हो गया।

एक दूसरे मत के अनुसार गुरु महाराज बहन के निवेदन पर उनकी बात रखने के लिये राष्ट्रपति भवन पधारे। राष्ट्रपति जी उनके दर्शन कर बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने दादा दरबार बनवाया।

गुरु महाराज जी के जीवन काल में भक्तों की संख्या बढ़ती रही और इस प्रकार श्री बड़े सरकार का कथन 'तू दिल्ली चले जा, दिल्ली दरबार चले जा' सत्य हुआ। गुरु आदेश पूर्ण होने पर बाबा ने वहाँ समाधि ले ली। आज लाखों की संख्या में दिल्ली दादा दरबार में लोग दर्शन के लिए आते हैं और वहीँ पर श्री गुरु महाराज जी की समाधि स्थापित है।

एक 3 साल का बालक इंदौर दरबार में श्री बड़े सरकार के साथ खेला करता था। श्री बड़े सरकार को उस बालक से इतना अधिक प्रेम हो गया कि उन्होंने उस बालक को गोद ले कर 'छोटे सरकार' नाम दिया और उन्हें औपचारिक एवं धार्मिक शिक्षा प्रदान की।

एक दिन श्री बड़े सरकार श्री छोटे सरकार को दिल्ली लेकर आये और गुरु महाराज जी के भक्तों को बतलाया कि उनके गुरु ने फिर से जन्म ले लिया है और श्री छोटे सरकार स्वयं गुरु महाराज जी हैं। गुरु महाराज जी अपने शिष्यों से कहा करते थे कि उनके अगले जन्म में वह इतनी तेजी से दौड़ेंगे कि कोई भी उन्हें पकड़ नहीं पाएगा। वह उन्हें यह भी कहते थे कि अगले जन्म में वह एक बालक के रूप में कई चमत्कार करेंगे और श्री छोटे सरकार ने बाल अवस्था में कई चमत्कार दिखलाये। यही नहीं, उन्होंने अपने भक्तों के कान में कुछ ऐसी बातें दोहराई जो केवल वह और उनके गुरु महाराज ही जानते थे। एक दिन वे गुरु महाराज जी की समाधि पर खड़े होकर बोले-जो अंदर है वह ही बाहर है। ऐसी घटनाओं के बाद भक्तों को दृढ़ विश्वास हो गया कि श्री छोटे सरकार ही उनके गुरु महाराज हैं। श्री छोटे सरकार पूजा, पाठ, हवन, भजन एवं अन्य वैदिक अनुष्ठानों के माध्यम से लोगों को धर्म के मार्ग पर चलाते हैं। दादाजी की स्तुति करना एवं करवाना ही इनके जीवन का एक मात्र लक्ष्य है।

गीता ज्ञान

पू.परमहंस स्वामी श्री प्रज्ञानानन्द जी महाराज

..... पिछले अंक से आगे

दवा के साथ जो पथ्य है वो खाता है कि नहीं? यह सब देखने का जो काम करता है वही अच्छा डॉक्टर है, वही अच्छा वैद्य है। ऐसे ही अच्छे गुरु भी अपने शिष्य का, अपने शरणागत का पूरा ध्यान रखते हैं। भगवान श्रीकृष्ण श्रेष्ठतम गुरु हैं। वे, अर्जुन क्या कर रहे हैं उसका और उनके मन में क्या है, उसका भी पूरा ध्यान रखते हैं, बल्कि केवल ध्यान ही नहीं रखते हैं, उसका उचित हल भी करते हैं। महाभारत का युद्ध होने से पहले अर्जुन के भीतर की हर शंका का समाधान करके फिर उसे युद्ध के लिये खड़ा किया।

एक संत महात्मा की बात करता हूँ। हमारे आध्यात्मिक जीवन में कई अच्छे से संत महात्माओं के दर्शन और सानिध्य पाया। जिनका नहीं पाया है, उनसे माफी मांगता हूं। उनमें से एक है पूज्य श्री शिवानंद जी सरस्वती ऋषिकेश। तो पूज्य स्वामी शिवानंद जी सरस्वती एक विलक्षण महापुरुष थे और डॉक्टर भी थे मलेशिया में। डॉक्टर थे यह आजादी से काफी साल पहले की बात है। मलेशिया से ऋषिकेश आ गए और वहाँ तपस्या की। परिणामस्वरूप साधना में उच्च स्थिति पर गए और उनके काफी अच्छे-अच्छे शिष्य भी हुए। वे सुबह 3.30-4.00 बजे जाकर दरवाजा खटखटाते थे अरे भाई क्या कर रहे हो, जागो। बंगला में कहते हैं- मुसाफिर रास्ते में जा रहा था थक गया था तो पेड़ के नीचे विश्राम किया और नींद आ गई, अभी धर्मशाला बहुत दूर है सूर्यास्त होने वाला है तो इनको जगाओ। हम सब पथिक है संसार में, हमेशा के लिए नहीं आए हैं हमको अपने धाम जाना है समय बहुत कम बचा है इसलिए अभी से जागो।

आज हमने एक समाचार सुना कि हमारी परंपरा में एक विश्व प्रसिद्ध संत योगानंद जी महाराज के शिष्य अमेरिका में उनका 27 तारीख को शरीर शांत हुआ अमेरिका के समय अनुसार 9.30 बजे आज जब यह समाचार सुना तो हमारा मन एकदम ऐसे हो गया कि हमने उनके कई बार दर्शन किये हैं। वे आए हैं पुरी भी आए थे। बड़े उच्च कोटि के साधक थे। 18 साल की उम्र में परमहंस श्री योगानंद जी के पास आए थे और अपने को समर्पित कर दिया उन्होंने। 1949 की बात है यह। 18 साल का एक अमेरिका का लड़का गुरुजी के पास आकर पूरा जीवन समर्पित कर देता है। आजकल भारत में क्या होता है, युवाओं के मन में क्या चल रहा है? विदेश में लोगों का अध्यात्म की ओर झुकाव बहुत अधिक हो रहा है और यहाँ पर धीरे-धीरे कम हो रहा है। यह शरीर कितने दिन रहेगा? शरीर का विनियोग करो। समय का सही उपयोग करो, भगवान ने जो सामर्थ्य दिया है उसका सही उपयोग करोगे तभी जीवन में प्रगति और उसके साथ-साथ समाजिक परिवर्तन और सामाजिक क्रांति आना संभव है।

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय।।

उनके मन में क्या परिवर्तन हो गया? देखिए परिवर्तन किसका होगा? जो सतगुरू के आश्रित होते हैं, उनके मन का परिवर्तन तुरंत होता है। जो गुरु के वचनों के अनुसार चलते हैं, उनके मन का परिवर्तन होता है।

देखिए एक दृष्टांत लेते हैं महाभारत से। युद्ध शुरू होने से पहले एक आश्चर्यजनक दृश्य सबके सामने आया। राजा युधिष्ठिर अपने रथ से उतरकर अपना मुकुट उतार कर रथ पर रखकर अस्त्र-शस्त्र सब रखकर और बिल्कुल निहत्थे से होकर कौरव सेना की ओर आ रहे हैं। उनको

देखकर पांडव आश्चर्य चकित रह गए कि यह क्या हो रहा है और कौरव लोग हंसने लगे कि देखो युधिष्ठर हमारी सेना को देखकर डर गया। वह संधि का प्रस्ताव लेकर हमारी तरफ आ रहा है। हमारे भारत में विचार है कि जो धार्मिक लोग होते हैं वह भीरू होते हैं, डरपोक होते हैं। मनुष्य के अंदर तीन गुण होते हैं। सत्व, तम और रज। तीनों अगर सम है तो मुक्ति है, अगर पूर्ण शुद्ध सत्व है तो भी मुक्ति है। जिसके तीनों गुणों में असमानता है तो बंधन है।

तो युधिष्ठिर ने क्या किया कि कौरव सेना के सामने जाकर भीष्म पितामह, आचार्य द्रोण, कृपाचार्य और भी जो रिश्ते में उनसे बड़े-बड़े थे उन सबके चरण स्पर्श किए और आशीर्वाद लिया। ऐसा करके युधिष्ठिर ने अपने गुरु और बड़ों के प्रति सम्मान प्रकट किया और युद्ध के मैदान में भी अपने संस्कारों और आदर्शो को बनाए रखा। तो देखिए यह भारतीय संस्कृति और भारतीय परंपरा है।

तो धृतराष्ट्र ने जो प्रश्न किया था कि युद्ध के सत्र में मेरे पुत्रों ने और पांडु के पुत्रों ने क्या-क्या किया तो उसका हम यह गीता के अंतिम श्लोक से समाधान कर रहे हैं।

यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः।
तत्र श्रीर्विजयो भूतिध्रुवा नीतिर्मतिर्मम्।।

जहाँ योगेश्वर श्रीकृष्ण और श्रेष्ठ धनुर्धर अर्जुन हैं वहाँ निश्चित रूप से अनन्त ऐश्वर्य, विजय, समृद्धि और नीति होती है, ऐसा मेरा निश्चित मत है।

धृतराष्ट्र प्रश्न करते हैं कि युद्ध के मैदान में क्या हुआ और संजय बता रहे हैं क्या होने वाला है। हम लोग ज्योतिषी के पास जाते हैं और उसको हाथ दिखाते हैं। पिछले वर्ष नवम्बर में स्वामी समर्पणानंद जी, हम और एक संत मध्य एशिया के ओमान देश के मस्कट शहर एक साधना के कार्यक्रम में गये थे। आपकी जानकारी के लिये बता दें कि उस शहर में 100 साल से भी पुराना शिव मंदिर है। वहाँ के लोगों की मान्यता है कि ये स्वयंभू लिंग है। हवाई जहाज से निकल गए वहाँ पासपोर्ट वाले जो अधिकारी थे वे सामान, पासपोर्ट आदि जाँच रहे थे। आपस में दो अधिकारी बात कर रहे थे तो बीच मैं हंस लिया। तो उन्होंने पूछा आप कैसे ऐसे हंसे, क्या आपको हमारी बात का पता चल गया? हम तो अरबी में बोल रहे थे क्या आपको अरबी आती है? मैंने कहा मुझे अरबी तो नहीं आती है, लेकिन थोड़ा- थोड़ा मैं समझ गया आपकी बात। हमने कहा आप इस विषय पर बात कर रहे थे। उनको बड़ा आश्चर्य हुआ कि आपको कैसे पता चला? फिर उसने कोई ज्यादा पूछताछ नहीं की हमसे और हमको आगे निकाल दिया।

फिर आगे बढ़ने लगे तो तीन चार अधिकारी और बैठे थे उन्होंने कहा रुकिए कहाँ जा रहे हो? इधर आओ। हमने कहा क्या हुआ? तो बोले कि आप तीनों ने यह एक जैसे गेरूआ रंग के वस्त्र क्यों पहने? हाथ देखना जानते हो? हमने कहा जानते हैं, भगवान का हाथ है लेकिन इतना ही जानते हैं कि अच्छे कर्म करिए। इससे अधिक नहीं जानते। फिर उसने कहा अच्छा जी ठीक है जाओ आप। देखिए हम ज्योतिषी के पास जाते हैं तो उसको हाथ दिखाते हैं और यह पूछते हैं कि बताइए क्या होने वाला है।

संजय बोलते हैं क्या होने वाला है। यह उपदेश केवल धृत्तराष्ट्र के लिए नहीं है। हम सबके लिए है, सभी के लिए है। गीता में भगवान का सबसे अधिक जो नाम प्रयोग हुआ वो कृष्ण ही है और अर्जुन का सबसे अधिक जो नाम आया है वो पार्थ आया है। कृष्ण नाम बहुत अनोखा है। कृष्ण अर्थात कृष्णात् इति कृष्ण, आकर्षणात् इति कृष्ण, कृषियति इति कृष्ण। जो खेती करते हैं, कृषि करते हैं वो कृष्ण हैं। कहेंगे कि यह क्या है? देखिये कृष्ण और उनके भाई दोनों ऋषि संस्कृति, कृषि संस्कृति के द्योतक हैं। भगवान बलरामजी के हाथ में हल है।

.........शेष अगले अंक में

श्री राम कथा

पू. आचार्य श्री दयानंद शास्त्री जी महाराज

पिछले अंक से आगे........

बाबा तुलसी के शौच से बचे हुए जल को जब उस बेरी में बैठे प्रेतात्मा ने रोज पिया तो उसके मन में कृतज्ञता जगी कि जो साधु हमें रोज पानी पिलाते हैं इन्हें कुछ दे दूँ तो अच्छा होगा। तो आज प्रेत ने प्रकट होकर बाबा तुलसी से निवेदन किया कि महाराज कुछ मांग लो। बाबा ने कहा आप है कौन? वो बोला मैं प्रेत हूँ। कहा, भला प्रेत से क्या मांगा जाए कि उपासना तो हम सीताराम जी की कर रहे हैं, प्रेतों से कोई अपेक्षा नहीं तो क्या मांगें आपसे? पर आप जब कहते हैं मांगो तो मैं श्री सीताराम जी की भक्ति मांग रहा हूँ। मुझे श्री सीताराम जी के चरणों के दर्शन हो जाए आपकी ऐसी कृपा हो।

प्रेत गदगद हुआ। कहा मेरी ऐसी सामर्थ्य तो नहीं कि मैं श्री सीतारामजी के दर्शन करवा दूँ, पर रास्ता अवश्य बताऊंगा। वह रास्ता क्या होगा? जहाँ आप नित्य कथा सुनने जाते हैं वहाँ नित्य कथा रसिक श्री हनुमान जी महाराज विद्यमान होंगे। राम कथा सुनने को रसिया, राम लखन सीता मन बसिया। कोई ऐसी कथा देश में नहीं, विश्व में नहीं, धरती पर नहीं तीनों लोकों में नहीं जिस कथा में हनुमान जी की उपस्थिति ना हो। बिना हनुमान जी की उपस्थिति के कोई कथा होगी ही कैसे? वे अव्वल स्त्रोता हैं, बैठने से पूर्व अपना स्थान धारण करते हैं और कथा समाप्ति पर श्रोताओं के चले जाने के बाद अपना आसन छोड़ते हैं। बाबा आप जिस पंडाल में कथा सुनने जाते हैं उसमें सबसे पीछे आँख से अंधे, अंग में कुष्ठ रोग और उनके शरीर से स्राव होता है विकारों का जिन पर मक्खियाँ भिनभिना रही है ऐसा जो शरीर आपको दिखे विकलांग और निन्दित स्वरूप हो वे कोई और नहीं अपने हनुमान जी हैं। साधु कभी पूजा की भावना नहीं रखते। किसी प्रकार का सौंदर्य वर्धन नहीं करते, लोकमान्यता बढ़ जाए ऐसी अभिलाषा नहीं रखते। लोकनिंदा हो तो कल्याण होगा और प्रशंसा होगी तो गिरावट आएगी। इसलिए बचाव रखना चाहिए। इस प्रकार के स्वरूप के श्री हनुमान जी महाराज आसानी से पहचान में आ जायेंगे। हनुमानजी महाराज की कृपा हो जाय तो श्री सीतारामजी के दर्शन में तो विलंब नहीं लगेगा।

तुलसी बाबा आए आज कथा में विराजमान हुए लेकिन बुद्धि तो केवल हनुमान जी की खोज में है। कथा ने विश्राम लिया। श्रोतागण उठ-उठ कर घर की ओर चले। भगवान को प्रणाम किया तुलसी बाबा ने। जो ढ़ीले-ढ़ाले होते हैं शरीर से वे सबके बाद में ही जा पाते हैं।स्राव हो रहा है अंग से विकारों का, शरीर पर मक्खियाँ भिनभिना रही है ये देख तुलसी बाबा ने आकर के पैर को पकड़ लिया, तो उन्होंने अपनी ओर से विरोध करते हुए कहा- मुझे छोड़ दे! मुझे छोड़ दे। बाबा बोले- नहीं छोड़ूगा। या तो दर्शन दो या मेरे प्राण लो। बस दो ही रास्ते हैं या तो दर्शन दो या फिर मेरे प्राण लो, तीसरा कोई विकल्प नहीं। हनुमान जी को प्रकट होना पड़ा। बजरंगबली हनुमान जी महाराज की जय!

हनुमानजी प्रकट हुए और कहा वत्स! तुम्हारी क्या अभिलाषा है? कहा भगवन् श्री सीताराम जी भगवान के पावन दर्शन के लिए आँखें तरसती हैं बरसती हैं। अच्छा वत्स! इन आँखों को एक बार इस छवि दर्शन का सौभाग्य मिलेगा, पर तुम्हें चित्रकूट जाना पड़ेगा। बाबा बोले- चित्रकूट जाऊंगा। अगले ही दिन तुलसीदास बाबा काशी में अन्नपूर्णा मैया को प्रणाम किया और आज्ञा ली। काशीवास करते हुए भी हम आपके दर्शन से वंचित रहे पर अब सीताराम दर्शन की अभिलाषा जगी है मन में और इशारा मिल

गया है अब मैं जाता हूँ। जहाँ काशी नगरी से पैर आगे बढ़े तब ब्राह्मण में भगवान श्री विश्वनाथ आगे खड़े हो गए। जाकर तुलसी बाबा से पूछा महाराज कहाँ जा रहे हैं आप? कहा कि मैं चित्रकूट जा रहा हूँ। वर्षो से यहाँ पर मैंने उपासना की, भगवती अन्नपूर्णा और भगवान शिव की आराधना की पर नैत्र तृप्त नहीं हुए। इन आँखों से एक बार देख जो लेता युगल को तो मैं तृप्त जो हो जाता, पर यह अभिलाषा पूरी नहीं हुई।

भगवान शिव ने कर्पूर गौरम करूणा अवतार को प्रकट किया। ब्राह्मण वेषधारी भगवान भोलेनाथ स्वयं प्रकट हो गए, बोले मैं ही शिव विश्वनाथ हूँ। वत्स तुलसी! तुम चित्रकूट जाओ, जाओ। अब तुम चित्रकूट में ही अपने जीवन का परम धन प्राप्त करो। प्रभु श्री राम दर्शन देंगे और वे आए चित्रकूट में, यहाँ विराजमान हुए। हनुमान जी महाराज ने इशारा किया ही था। दर्शन देने की बात आई। अनसूया माता के आश्रम के नीचे मंदाकिनी के तट पर स्फटिक शिला पर समाधिस्थ विराजमान हैं तब श्री राम लखन कृपा से हरे हरे घोड़े पर सवार होकर, जेवर आदि से सुसज्जित, पीताम्बर वस्त्र धारण किये हुए और धनुष बाण को थामे हुए जा रहे हैं। तुलसी बाबा ने देखा ये दोनों शिकारी लगते हैं। राम लखन को शिकारी समझकर तुलसी बाबा ने नेत्र बंद किये।

देखो साधु की साधुता में कहाँ-कहाँ हमको नजर डालनी है।कई स्थितियाँ जीवन में ऐसी आती है जहाँ हमारा विरोध सफल नहीं होता, विरोध करने की योग्यता और क्षमता भी नहीं होती पर आँख बंद करने में क्या जाता है। किसी शिकारी को कोई साधु अपनी आँखों के सामने शिकार करते देखे तो न्याय कहता है कि उससे बाण छीन ले, पर यदि सामर्थ्य नहीं हो तो आँखें बंद कर लेनी चाहिये। तुलसी ने देखा दोनों राजकुमार हैं और राजकुमारों का अपना बल होता है। इन्हें तिरस्कार करना मेरे बूते का विषय नहीं पर यह तिरस्कार ही है कि मैं अपनी आँखों को बंद करता हूँ, आपके शिकार क्रिया को, लीला को मैं देखूंगा नहीं। आँख बंद किया, दोनों शिकारी स्वरूप में श्री सीताराम श्री राम लखन चले जाते हैं। हनुमान जी प्रकट होते हैं- महाराज रामजी का दर्शन किया? नहीं किया। बाबा अभी यहाँ से घोड़े पर सवार होकर निकले थे। हाँ निकले तो थे दो राजकुमार मगर वे तो शिकारी थे। वे शिकार करने आए फिर शिकारी को देखने का मन नहीं किया। तब आँख बंद कर लिया।

अच्छा बाबा अब आप जाओ मतंगनाथ महादेव। 14-15 लाख साल पुराने भगवान महादेवजी का मंदाकिनी के तट पर शिवालय मिलेगा आपको। लाखों-लाखों साल पुराना शिवालय है भारत में। 50-60 सीढ़ियाँ चढ़ने के बाद ऊपर शिवालय है, उनके नीचे में रामघाट पर जाओ, बाबा रामघाट पर डेरा डालो वहाँ आपको श्री सीताराम जी के दर्शन होंगे। एक प्रसिद्ध दोहा आपने सुना ही होगा-

चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसे, तिलक करे रघुबीर।।

वहाँ तुलसी चंदन घिस रहे हैं। वहाँ मंदाकिनी के तट पर ठीक समय राम-लखन आये हैं। तुलसी ने चंदन धिसकर लगा दिया है। भगवान ने आकर कहा- बाबा चंदन देंगे? कहा कौन हैं आप? राम ने कहा बाबा यहाँ घाट पर जितने संत हैं सब राम-लखन की मूर्ति ही हैं। राम ने स्वयं तुलसी को सियाराम मय सब जग जानि का प्रसाद दे दिया। राम ने तुलसीदास जी को को स्वयं सीयाराममय की आँखें प्रदान की। बाबा, यहाँ सब राम-लखन है, कोई भिन्न नहीं है। राम की दृष्टि भगवान स्वयं प्रदान कर रहे हैं बाबा तुलसी को। हनुमानजी सोचने लगे क्या इन्होंने दर्शन किया अथवा अभी वंचित ही रहे? हनुमान जी ने कहा तुलसी, आपने राम लखन का दर्शन किए? प्रभु आए थे। तुलसी बाबा के मुख से ही उक्त दोहा निकल गया। चित्रकूट के घाट पर, भई संतन की

भीर.....हमने केवल एक राम लखन के दर्शन नहीं किये, यहाँ तो जो जो मूर्तियां हमारे सम्मुख आते सब राम-लखन, सब राम-लखन, सब राम-लखन है ही दिखे। बाबा हनुमान से बोले- किसी एक राम लक्ष्मण के लिए नहीं, हमारी आँखों के सामने जो-जो तिलकधारी आये सब राम-लखन सब राम-लखन थे। यह आँख तुलसी को वहाँ प्राप्त हुई।

हनुमान आपने तो मुझे कृतार्थ कर दिया लेकिन अभिलाषा अभी और मन में है। बाबा वो क्या अभिलाषा है? राम को मैं दल-बल समेत राजशाही वेष में राम राजा, सीता और अपने तीनों युवराज राजकुमार भाइयों के साथ आप सहित पूरी सेना का हम दर्शन करना चाहते हैं। यह दर्शन हमें प्राप्त हो। बाबा तुलसी के मनोरथ को हनुमान जी ने स्वीकार किया पर कहा कि कलियुग में ऐसे दर्शन तो होने नहीं और संभव भी नहीं है। कलिकाल के जीवों को आभास हो जाय, सपना आ जाय इतना हो समझो पा लिया। इससे आगे की हिम्मत जुटाना, साहस करना बड़ा कठिन काम है। होता तो है पर बड़ा कठिन है। हनुमान जी ने कहा कि इस समय में भगवान के ऐसे पार्षदों सहित दर्शन होना कठिन है।

बाबा ने कहा जिनके हनुमान जी का सहारा होगा उनके लिए कुछ भी कठिन नहीं है। जांके कृपा रघुपति कृपाल की, जां के गति है हनुमान की, ताकि पैज पूजी आई यह रेखा कुलिस पाषान की। जांके गति है हनुमान की। गति हनुमान की है, जिन्होंने श्री हनुमान जी की ओट ले लिया है उनकी कामनाएं पूरी होती ही है। यह रेखा पत्थर की है, यह रेखा कुलिस की है, यह पत्थर की लकीर है मिटेगी नहीं। हनुमान जी की ओट ले और मनोरथ बाकी रह गया तो आपने अभी ओट लिया ही नहीं। बोलो भक्तवत्सल भगवान की जय। हनुमान जी के आश्रय हो और उनको राम जी के दर्शन कलियुग में ना हो हम विश्वास नहीं कर सकते। हमें विश्वास है कि हनुमान हमें राम दर्शन करवाएंगे। तो ठीक है। तुम वहीं चले जाओ, स्फटिक शिला के पास, अनसुइया माता की सन्निधि में। तुलसी बाबा जब वहाँ पधारे तो उन्होंने क्या देखा कि उत्तर दिशा से कामदगिरि पर्वत के इर्द गिर्द चारों और धूल उड़ने लगी, नगाड़े बजने लगे, शंखनाद होने लगा, कई वाद्य यंत्रों की ध्वनि प्रकट होने लगी, धम धम की आवाजें आने लगी, हाथी के पैरों की आवाजें, घोड़े की हिनहिनाहट, रथ की चट चटाहट की आवाजें आने लगी, सारी आवाजें मिलकर युद्ध की ओर जाने वाली सेना की महा आवाज सुनाई देने लगी। तुलसीदास जी ने देखा मेरे युगल सरकार विराजमान हैं रथ पर, मेरे ठाकुर विराजमान हैं रथ पर। दोनों भाई चंवर ढुला रहे हैं। इन नेत्रों से भगवान के दर्शन किए।

मेरे हरि भक्तों आप कलियुग में कहाँ हो आप तो सतयुग में हो। कलियुग तो तब होगा जब पूछेंगे लोग कि कौन राम, कैसे राम, कहाँ राम। ना राम नाम रहेगा ना राम की कथा रहेगी पूछेंगे राम लोग, कौन थे, कैसे होंगे? न कथा रहेगी न राम नाम का अस्तित्व रहेगा। न ही राम नाम का परिचय किसी को प्राप्त होगा। ऐसे दिन आए तो समझो कलियुग आया है। अभी तो बच्चे-बच्चे राम-राम करते हैं। अभी तो राममय वातावरण है। कलियुग की छांया भी नहीं पड़ी है। बोलिये भक्तवत्सल भगवान की जय। हे मेरे हरि भक्तों इस प्रकार से यदि आग्रही होकर, इस प्रकार श्रद्धा की पूंजी लेकर हम सब रामायण जी की शरण में आया करेंगे तो शायद कलियुग आएगा भी नहीं।

रामचरित मानस में लिखा है- काल धर्म नहिं व्यापहि ताही, रघुपति चरन प्रीति अति जाही। नट कृत बिकट कपट खगराया। जिसका श्री रघुनाथ जी के चरणों में अत्यधिक प्रेम है उसको कालधर्म नहीं व्यापते। हे पक्षीराज! नट के द्वारा किया गया कपट चरित्र देखने वालों के लिये ....शेष अगले अंक में

शिव महापुराण कथा

(पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्णजी महाराज)

(वेद मंदिर अहमदाबाद)

पिछले अंक से आगे.....

कई राजाओं को देखा होगा आपने वे नृत्य देखते-देखते भी बीच-बीच में व्यसन करते हैं, अरे भाई जरूरी कहाँ है बीच में यह? नृत्य चल रहा है इतना सुंदर। क्योंकि उनको रस जिसमें आता है उनको उसमें ही आता है। तो हमारे भूत भावन शिवजी को भूत भावन क्यों कहते हैं? शिवजी को भूत भावन इसलिए कहते हैं कि भूत भावन का मतलब है जो भूतों को भी प्रिय है। मेरे भाई बहन भूत बोले तो इस सृष्टि का अंतिम निम्न जीव, इस सृष्टि का निम्न से निम्न प्राणी जो है वह भूत है। आप सोचिए मेरे भाई बहन उस निम्न प्राणी की भी प्रियता जिसको प्राप्त है तो समझ लीजिए जहाँ यह क्रम शुरू होता है परमात्मा श्री हरि से और यहाँ भूतों पर जाकर वह क्रम पूरा होता है। तो हमारे भोलेनाथ भूतों के जितने प्रिय हुए भगवान के भी उतने ही प्रिय हैं।

भगवान से लेकर भूत तक जो सबका प्रिय है वह शिव है, श्री हरि से लेकर भूत तक का जो प्रिय है। हम कितनों को प्रिय हैं? कोई अभिनेता वह कितनों को प्रिय है? बताओ देश के हमारे प्रधानमंत्री कितनों को प्रिय हैं? कोई क्रिकेटर कितनों को प्रिय है बताइए? अगर बोलचाल की भाषा में कहो तो तीनों लोक की सबसे बड़ी सेलिब्रिटी शंकर भगवान है, क्योंकि वे भगवान से लेकर भूत तक सबको प्रिय है। ऐसा कौन है, ऐसा कोई भी नहीं है जो कहे मुझे शिव प्रिय नहीं है। ऐसा कोई भी नहीं है। मान लो कोई सुनने के लिये बोल जावे कि देखें मना करते हैं फिर महाराज क्या उत्तर देते हैं? कोई खड़ा होकर कह देवे कि महाराज मुझे शिव प्रिय नहीं है बोलो क्या करोगे? स्वीकार करो महाराज कि आपकी बात झूठी है। पर कृपानाथ एक बात बोलूं नेता में और कथाकार में एक बहुत बड़ा फर्क होता है। बोलते दोनों है, लेकिन बहुत बड़ा फर्क होता है। नेता बिना आधार के बोल जाता है, वक्ता पहले आधार बनाता है फिर बोलता है। अगर कोई कह दे कि मैं नहीं मानता कि शिव सबको प्रिय है। चलो एक बार के लिए तुम ही कह दो कि मुझे शिव प्रिय नहीं। चल तुमने तो रुद्राक्ष की माला पहनी हुई है बोलोगे। चलो कोई एक जना बोल दो कि मुझे शिव प्रिय नहीं। एक बार ऐसे ही आप बोल दो। झूठ के लिए भी नहीं बोल रहे हो।

रामजी के मन में आया कि हम खेल खेलेंगे, गेंद का खेल खेलेंगे। एक जना इधर से मारेगा, एक जना उधर से मारेगा। तो उसके लिए एक सामने वाली टीम चाहिए। कोई भी खेल खेलने के लिए दो टीम चाहिए। तो रामजी ने कहा आओ भैया गेंद खेलते हैं। अब खेलने के लिए टीम चाहिए सामने। अब रामजी के सामने कोई खेलने को तैयार नहीं। कौन सामने आवे राम जी के? रामजी के सामने जब कोई आएगा ही नहीं तो खेल कैसे होगा? तब भरत जी सामने आए। तो लोगों ने कहा आप उनके सामने जाओगे? तो भरत ने कहा- अगर मैं सामने नहीं आऊंगा तो प्रभु का खेल कैसे होगा? भले ही सामने जाकर हार जाऊंगा पर प्रभु का खेल हो इसके लिए सामने किसी एक को जाना पड़ेगा।

इसलिये मैंने कहा कोई एक कह दे कि मुझे शिव प्रिय नहीं तो मैं उनसे पूछूंगा। चलो आपको शिव प्रिय नहीं है, पर क्या आपको सत्य प्रिय है? बोलो, चलो तुमसे ही पूछते हैं। तुमको शिव प्रिय नहीं है एक बार बोल दो नहीं है। लेकिन क्या तुमको सत्य प्रिय है? कल्याण प्रिय है बताओ? हम भले झूठों के बादशाह हैं लेकिन हमें सत्य प्रिय है।मेरे भाई

बहन इस भूतल पर सत्य, कल्याण और सौंदर्य तीनों के स्वामी शंकर भगवान हैं। ये तीनों शिव के ही अंश है। इसलिए शंकर भगवान कहीं पर भी अपने हस्ताक्षर करते हैं तो 'शिव' नहीं लिखते हैं, 'सत्यम् शिवम् सुंदरम्' लिखते हैं। इस भूतल पर ये तीनों भगवान शिव के ही स्वरूप हैं। सत्य शिव का स्वरूप है, सौंदर्य शिव का स्वरूप है और कल्याण भी शिव का ही स्वरूप है। शिव और कल्याण दो नहीं है।

इसलिए भैया ऐसा कोई नहीं जो कह सके कि मैं शिव को नहीं मानता। आप डमरू वाले को ना मानो, आप त्रिशूल वाले को ना मानो, आप त्रिपुंड वाले को ना मानो, पर सत्य के रूप में तो मानना हीं पड़ेगा। शिव के बिना किसी का काम नहीं चलता।

आपको वाल्मीकि रामायण का एक प्रसंग स्मरण करवाता हूँ। भगवान शिव का तेज कौन धारण करें, भगवान शिव का अद्भुत अप्रतिम तेज है उसे कौन धारण करे तो गंगा जी को कहा कि हे गंगाजी! आप धारण करो। आप शीतल हो, आपमें शीतलता है तो आप इस उष्ण तेज को धारण करो। गंगा जी ने कहा लाओ मैं कर लूंगी धारण। लेकिन गंगा जी ने धारण तो कर लिया शिव के तेज को मगर उसे संभाल नहीं पाई। मैं नहीं सम्भाल सकती, मैं नहीं सम्भाल सकती। दूसरा कोई सम्भालो, दूसरा तो कौन सम्भाले?

शंकर भगवान के उस तेज को गंगाजी ने ले जाकर के एक द्वीप में स्थित किया और वही तेज चारों ओर फैल गया और इस तेज के जम जाने से स्वर्ण धातु पैदा हुई, रजत धातु पैदा हुई, कांसा धातु पैदा हुई, पीतल धातु पैदा हुई, लोहा भी जो है वह शंकर भगवान के उसी तेज से प्रकट हुआ। अब आप बताओ शिवजी को तो नहीं मानते पर सोने को तो मानते हो? सोना शिव का है, शिवजी के तेज से सोना बना, भगवान शिव के तेज से स्वर्ण बना है। इसलिए स्वर्ण संस्पर्शित जल गंगाजल के समान माना जाता है। बताओ अब जो लोग शिव की निंदा करते हैं उनको तो स्वर्ण छूना भी नहीं चाहिए। जिनको शिवजी पसंद नहीं उनको चांदी रखनी ही नहीं चाहिए। करुणानिधान यह सभी शिव से उत्पन्न हैं, वाल्मीकि रामायण का प्रमाण है।

इसलिए शिवरहित सृष्टि है ही नहीं। बस कृपानाथ भूल इतनी है कि शिव के स्वरूप को समझने की जरूरत है। ऐसे ही बिना समझे बोल देते हैं कि ये तो भांग वाले भगवान हैं। कितने की आती है भांग? एक बात बताओ आप, आप तो सब बड़े-बड़े लोग हैं, आप समझो कि मुंबई से आपका एक व्यापारी मित्र आया है। आपको उसके साथ चाय पीने के लिए चलना है, आपको हम जरा चाय पिलाते हैं। तो आप उसको क्या रेलवे स्टेशन पर सिकुरा वाली 10 रु. वाली चाय पिलाओगे या किसी बहुत बड़ी होटल में ले जाएंगे? वहाँ कम-से-कम कितने रुपये की चाय होगी? 300 रुपये की भाई। आप उसको अगर 10 रु. वाली चाय पिलाओगे तो कहेगा कि उनके साथ व्यापार करके क्या मिलेगा ? जिस व्यक्ति का कार्य बड़ा होता है उसका खान-पान का स्तर भी ऊंचा होता है। अगर वह व्यवसाय में बड़ा है, प्रतिष्ठा में बड़ा है तो उसका आहार भी उसी स्तर का होगा।

जो भगवान शिव आशुतोष त्रिलोकी के स्वामी कहे जाते हैं, त्रिलोकी के गुरु कहे जाते हैं, अरे भाई वे भगवान शिव क्या 2000 रु. किलो वाली भांग खायेंगे? बताओ जो अखिलेश्वर हैं, जो अखिलेश्वर भगवान हैं वे क्या इतनी साधारण सी चीज को अपना आहार बनाएंगे? जरा सोचिए। इसलिए ध्यान दीजिए मेरे भाई बहन! भगवान शिव का कोई नैवेद्य नहीं है भांग। हमारे ठाकुर जी माखन खाते हैं माखन। मक्खन कोई खावे तो भैया चमकने लगता है। माखन खाने वाला आदमी चमकने लगता है तो भगवान शिव अगर भांग खाते हैं तो जो भांग खाते हैं वे कैसे

दिखते हैं? बताओ क्या वे चमकते है? भांग खाने वालों के चेहरे में चमक आती है बताइए? दिमाग में चमक आती है? दिमाग में चमक नहीं आती है, अरे कृपानाथ दिमाग में भांग चली जाय तो पशुओं की तरह जमीन पर पड़े रहते हैं, दिमाग घूमता है। लेकिन हमारे शिवजी की चमक देखो आप।

कर्पूरगौरं करुणावतारं संसारसारम् भुजगेन्द्रहारम्।
सदावसन्तं हृदयारविन्दे भवं भवानीसहितं नमामि।।

व्यसनी कभी किसी के दिल में नहीं बसता है, बुरा न माने कोई। किसी स्त्री का पति भी व्यसनी हो तो उसको बस संबंध निभाना पड़ता है, पर पति दिल में नहीं बसता है और हम तो विनती करते हैं कि भोलेनाथ हमारे हृदय में बसिये **सदावसन्तं हृदयारविन्दे**। क्या किसी व्यसनी को हृदय में बसाओगे? बुरा न मानिएगा, सृष्टि में सब प्रकार के प्रबंधन है। तामसी प्रधान देवता भी है, तमोगुण प्रधान देवता भी है भूतल पर। किसी-किसी व्यवहार के लिए हम उन तमोगुणी प्रधान देवताओं को भी अर्चन-वंदन करते हैं, लेकिन बस वह एक क्रम है, करना है इसलिए करते हैं, पर क्या उनको हृदय में बसा सकते हैं, बोलिए? हृदय में नहीं बसा सकते। जिसमें तामस है वह हृदय में कैसे बसेगा बताइए? अगर भगवान शिव व्यसनी होते, अगर भगवान शिव तम प्रधान होते तो शास्त्र क्यों कहता- सदा वसंतम हृदयारविन्दे?

आज शिवजी का स्वरूप देखो आप। शिवलिंग देखो- न इसके नेत्र हैं, न इसके कान हैं, न इसके होठ हैं, न इसके मस्तक है, न चरण है, न इसके हाथ है लेकिन फिर भी शिवलिंग का स्वरूप देखकर मन शीतल हो जाता है, मन प्रसन्न हो जाता है, मन प्रफुल्लित हो जाता है। कृपानाथ! शिव के स्वरूप को समझने की आवश्यकता है। मैं कभी शंकर भगवान का विरोधी तो नहीं रहा लेकिन कभी मैं समझा भी नहीं कि शिव तत्व है क्या और उसका कारण ऐसा नहीं कि मैं शिव को कुछ मानता नहीं, इसका कारण है कि मैं जिनको जानता हूँ उसी में ही अपने को समय नहीं, उसी में ही अपना समाधान हो रहा है, फिर क्यों दूसरी खिड़कियों में झांके। जिसको कथा में रस नहीं आता है वह फोन देखता है। बुरा मत मानिये, जब कथा में रस आता है तो कोई बगल वाला समय भी पूछे तो बुरा लगता है कि भैया कथा सुनने दो।

कृपानाथ! करुणानिधान! फिर गुरुजनों की कृपा से एक मन में भाव आया कि शिव को जाने तो सही भाई। शिव को जाने बिना हम अधूरे हो जाएंगे। शिव को जानना है। शिव को क्यों जानने की इच्छा हुई? क्योंकि नरसी मेहता को शंकर भगवान ही वृंदावन लेकर गए। करुणानिधान! शिव तत्व स्वार्थी नहीं है। अगर शिवजी स्वार्थी होते तो नरसी जी को वृंदावन नहीं, कैलाश पर्वत पर ले जाते कि चल प्यारे उधर चल। कोई क्यों किसी को कहीं और ले जाएगा। पुन: मैं एक छोटी सी प्रशंसा आप लोगों की करता हूँ। इस प्रकार के आयोजन से आप अपने समाज के लिए भी बहुत सारा धन इकट्ठा कर सकते हैं, लेकिन आपने समाज के लिए धन इकट्ठा नहीं करके आप हमारी गौशाला के लिए एकत्रित करते हैं यही शिव तत्व है। शिव तत्व स्वार्थी तत्व नहीं है। जीव का वास्तविक कल्याण जिसमें है वही उसे प्रदान करना यह शिव का सार तत्व है। पुनश्च: सुन लें- जीव का परमहित जिसमें प्रतिष्ठित है वो उसे प्रदान करना ही शिव तत्व का स्वरूप है।

मेरे भाई बहन! आज से कई साल पहले 2007-08 की बात रही होगी, एक बार गिरिराज जी में छप्पन भोग का मनोरथ करने का मन हुआ। उस समय तक मेरा इस संस्था से कोई परिचय नहीं हुआ था और यह ज्ञान भी नहीं था कि अपने ठाकुर जी को केवल वेदलक्षणा भारतीय गोमाता का ही दूध, घृत, मिठाई भोग लग सकता है। तो हमारे परिचित एक घी के व्यापारी को पूछा तो..शेष अगले अंक में

सबसे कीमती मानव जीवन का समय

(परम श्रद्धेय स्वामी श्री रामसुखदास जी महाराज)

हम लोगोंके पास एक बहुत बढ़िया और सीमित चीज हैं वह है मानव जीवनका समय। प्राय: वस्तुएँ, धन आदि नष्ट न हो जायँ इस तरफ तो दृष्टि है, लेकिन समय नष्ट न हो जाय, समय फालतू न चला जायें इस तरफ ध्यान कम है। जिस समयके बल पर हम जी रहे हैं, वह जीवनका समय निरन्तर खर्च-ही-खर्च हो रहा है। वस्तु आदिको तो तिजोरीमें रखकर सुरक्षित कर सकते हैं, लेकिन समयको किसी भी रीतिसे खर्च होनेसे बचा नहीं सकते। हम अपने जीवनके समयको बढ़ा नहीं सकते, इसका सदुपयोग ही हमारे हाथमें है। जीनेका समय पूरा होते ही यहाँसे जाना पड़ेगा। समय देकर हम धन कमा सकते हैं, लेकिन धन देकर जीनेका समय नहीं बढ़ा सकते। इसलिए समयको भगवान् के चिन्तन-भजन, गोसेवा, विवेक-विचार आदि श्रेष्ठ कार्योमें लगाना चाहिए। हमारा समय श्रेष्ठ-से-श्रेष्ठ कार्योमें, उत्तम कार्योमें लगें ऐसी सावधानी हर समय रहनी चाहिए।

कविता

गोविंद गायों चरावता, होती लाखों गाएं ।
आज घर सूं काढ़ दी, पापी जन्मिया आए ।
पापी जन्मिया आए, वक्त अब आई खोटी ।
ब्राह्मण घर नहीं गाय, घर-घर बंधी झोटी ।
हिंदू धर्म ने छोड़कर पापी प्रलय जाए ।
गोविंद गायों चरावता, होती लाखों गाएं ।
गायों रोवे बारणे, आंसू एकण धार ।
ताता ताव तपाय के क्यों मारो तलवार ।
क्यों मारो तलवार, जीवित खाल कढ़ावो ।
हिंदू भायां री मावड़ी जिण थे बेचन खाओ ।
जे जननी ज्यूं मानता तो क्यों पड़ती म्हने मार ।
गायों रोवे बारणे, आंसू एकण धार ।

-प्रेमसिंह उदेश राजपुरोहित
मु.-उदेश नगर, कोसाना, जिला-जोधपुर

भजन

(तर्ज- तुम करो प्रभु से प्रेम, अमृत बरसेगा)

तुम करो गोमाता से प्रेम, गो रस बरसेगा
बरसेगा नित बरसेगा,
तुम करो गोमाता से प्रेम, गो रस बरसेगा
गोमाता को गले लगावो,
भय और टेंशन दूर भगावो,
सुखी रहो दिन रात, गो रस बरसेगा ।।1।।
तुम करो गोमाता से प्रेम, गो रस बरसेगा
गोसेवा है, प्रभु की सेवा।
करे जो पावे अमृत मेवा।
मिले गोलोक में वास, गो रस बरसेगा ।।2।।
तुम करो गोमाता से प्रेम, गो रस बरसेगा
पंचगव्यों का सेवन करलो।
मन और बुद्धि निर्मल करलो।।
रहो सदा निरोग, गो रस बरसेगा ।।3।।
तुम करो गोमाता से प्रेम, गो रस बरसेगा
गोमय है लक्ष्मी का निवास
गोमूत्र में गंगाजी का वास
गो कोटि देव समान, गो रस बरसेगा।।4।।
तुम करो गोमाता से प्रेम, गो रस बरसेगा
वैज्ञानिक भी केवण लागा,
पंचगव्यों ने पीवण लागा,
मिल गयो रोग निदान, गोरस बरसेगा ।।5।।
तुम करो गोमाता से प्रेम, गो रस बरसेगा।
पथमेड़ा री अर्ज है याही,
गोसेवा थे करलो भाई,
गोपालन थे करलो भाई,
जन्म सफल हो जाई गो रस बरसेगा ।।6।।
तुम करो गोमाता से प्रेम, गो रस बरसेगा।

-गोसेवक धनराज चौधरी, जोधपुर

भज गोविंदम्
(गोविंदकी स्तुति-प्रार्थना)

(*श्रीमद् आदि शंकराचार्य द्वारा रचित*)

...........पिछले अंक से आगे

मा कुरु धनजनयौवनगर्वं,
हरति निमेषात्कालः सर्वं।
मायामयमिदमखिलम् हित्वा,
ब्रह्मपदम् त्वं प्रविश विदित्वा (11)

धन, शक्ति और यौवन पर गर्व मत करो, समय क्षण भर में इनको नष्ट कर देता है। इस विश्व को माया से घिरा हुआ जान कर तुम ब्रह्म पद में प्रवेश करो।

दिनयामिन्यौ सायं प्रातः,
शिशिरवसन्तौ पुनरायातः।
कालः क्रीड़ति गच्छत्यायुस्तदपि
न मुञ्त्याशावायुः (12)

दिन और रात, शाम और सुबह, सर्दी और बसंत बार-बार आते-जाते रहते है। काल की इस क्रीड़ा के साथ जीवन नष्ट होता रहता है पर इच्छाओं का अंत कभी नहीं होता है।

द्वादशमंजरिकाभिरशेषः
कथितो वैयाकरणस्यैषः।
उपदेशोऽभूद्विद्यानिपुणैः,
श्रीमच्छंकरभगवच्चरणैः (13)

बारह गीतों का ये पुष्पहार, सर्वज्ञ प्रभुपाद श्री शंकराचार्य द्वारा एक वैयाकरण को प्रदान किया गया।

जटिलो मुण्डी लुञ्छितकेशः,
काषायाम्बरबहुकृतवेषः।
पश्यन्नपि च न पश्यति मूढः,
उदरनिमित्तं बहुकृतवेषः (14)

तुम्हें पत्नी और धन की इतनी चिंता क्यों है, क्या उनका कोई नियंत्रक नहीं है? तीनों लोकों में केवल सज्जनों का साथ ही इस भवसागर से पार जाने की नौका है।

अङ्गं गलितं पलितं मुण्डं,
दशनविहीनं जतं तुण्डम्
वृद्धो याति गृहीत्वा दण्डं,
तदपि न मुञ्चत्याशापिण्डम् (15)

बड़ी जटाएं, केश रहित सिर, बिखरे बाल, काषाय (भगवा) वस्त्र और भांति भांति के वेश ये सब अपना पेट भरने के लिए ही धारण किये जाते हैं, अरे मोहित मनुष्य तुम इसको देख कर भी क्यों नहीं देख पाते हो?

अग्रे वह्निः पृष्ठेभानुः,
रात्रौ चुबुकसमर्पितजानुः।
करतलभिक्षस्तरुतलवासः,
तदपि न मुञ्चत्याशापाशः। (16)

क्षीण अंगों, पके हुए बालों, दांतों से रहित मुख और हाथ में दंड लेकर चलने वाला वृद्ध भी आशा-पाश से बंधा रहता है।

कुरुते गङ्गासागरगमनं,
व्रतपरिपालनमथवा दानं।
ज्ञानविहिनः सर्वमतेन,

मुक्तिं न भजति जन्मशतेन। (17)

किसी भी धर्म के अनुसार ज्ञान रहित रहकर गंगा सागर जाने से, व्रत रखने से और दान देने से सौ जनमों तक भी मुक्ति नहीं मिल सकती।

भज गोविन्दम् मूढ़ मतिम्।
निहितम् किम्भूतमुपदिशाति अहम्।।

हे मूढ़ बुद्धि वाले मनुष्य! गोविन्द का भजन कर मैं तुझे क्या उपदेश दूँ।

अनन्यचेता
(नित्य निरन्तर स्मरण करने वाला)

साभार : गीता साधक संजीवनी

जिसके पास योग का बल होता है और जिसका प्राणों पर अधिकार होता है, उसको तो निर्गुण-निराकार की प्राप्ति हो जाती है; परन्तु दीर्घकालीन अभ्यास-साध्य होने से यह बात सबके लिये कठिन पड़ती है। इसलिये भगवान् गीता के श्लोक 8/14 में अपनी अर्थात् सगुण-साकार की सुगमतापूर्वक प्राप्ति की विधि बता रहे हैं।

अनन्यचेताः सततं यो मां स्मरति नित्यशः।
तस्याहं सुलभः पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिनः।।

हे पृथानन्दन! अनन्य चित्तवाला जो मनुष्य मेरा नित्य-निरन्तर स्मरण करता है, उस नित्य-निरन्तर मुझ में लगे हुए योगी के लिये मैं सुलभ हूँ अर्थात् उसको सुलभता से प्राप्त हो जाता हूँ।

अनन्यचेताः- जिसका चित्त भगवान को छोडक़र किसी भी भोग भूमि में, किसी भी ऐश्वर्य में किंचिन्मात्र भी नहीं जाता; जिसके अन्त:करण में भगवान के सिवाय अन्य किसी का कोई आश्रय नहीं है, महत्त्व नहीं है, वह पुरुष अनन्य चित्तवाला है। जैसे, पतिव्रता स्त्री का पति का ही व्रत, नियम रहता है। पति के सिवाय उसके मन में अन्य किसी भी पुरुष का रागपूर्वक चिन्तन कभी होता ही नहीं। शिष्य गुरु के और सुपुत्र माँ-बाप के परायण रहता है, उनका दूसरा कोई इष्ट नहीं होता। इसी तरह से भक्त भगवान के ही परायण रहता है।

यहाँ 'अनन्यचेता:' पद सगुण-उपासना करनेवाले का वाचक है। सगुण-उपासना में विष्णु, राम, कृष्ण, शिव, शक्ति, गणेश, सूर्य आदि जो भगवान के स्वरूप हैं, उनमें से जो जिस स्वरूप की उपासना करता है, उसी स्वरूप का चिन्तन हो। परन्तु दूसरे स्वरूपों को अपने इष्ट से अलग न माने और अपने-आपको भी अपने इष्ट के सिवाय और किसी का न माने, तो उसका अन्य की तरफ मन नहीं जाता। तात्पर्य यह हुआ कि 'मैं केवल भगवान का हूँ और भगवान ही मेरे हैं; मेरा और कोई नहीं है तथा मैं और किसी का नहीं हूँ' ऐसा भाव होने से वह 'अनन्यचेता:' हो जाता है।

'सततं यो मां स्मरति नित्यश:' -सततम्' का अर्थ होता हैं निरन्तर अर्थात् जबसे नींद खुले, तबसे लेकर गाढ़ नींद आनेतक जो मेरा स्मरण करता है; और 'नित्यश:'का अर्थ होता हैं सदा अर्थात् इस बात को जिस दिन से पकड़ा, उस दिन से लेकर मृत्यु तक जो मेरा स्मरण करता है।

'तस्याहं सुलभ: पार्थ नित्ययुक्तस्य योगिन':- ऐसे नित्ययुक्त योगी के लिये मैं सुलभ हूँ। यहाँ 'नित्ययुक्त' पद चित्त के द्वारा निरन्तर चिन्तन करनेवाले का वाचक नहीं है, प्रत्युत श्रद्धा-प्रेमपूर्वक निष्कामभाव से खुद भगवान में लगनेवाले का वाचक है। जैसे कोई ब्राह्मण अपने ब्राह्मणपने में स्थित रहता है कि 'मैं ब्राह्मण हूँ; क्षत्रिय, वैश्य आदि नहीं हूँ।' वह अपने ब्राह्मणपने को याद करे या न करे, पर उसके ब्राह्मणपने में कोई फर्क नहीं पड़ता। ऐसे ही 'मैं भगवान का हूँ और भगवान् मेरे हैं' इस नित्य-सम्बन्ध में दृढ़ रहनेवाला ही नित्ययुक्त है। ऐसे नित्ययुक्त योगी को भगवान् सुगमता से मिल जाते हैं।

भगवान के सिवाय शरीर, इन्द्रियाँ, प्राण, मन, बुद्धि अपने नहीं हैं, केवल भगवान ही अपने हैं, ऐसा दृढ़ता से मानने पर भगवान सुलभ हो जाते हैं। परन्तु शरीर आदि को अपना मानते रहने से भगवान सुलभ नहीं होते।

भगवान के साथ अपनी भिन्नता तथा संसार के साथ अपनी एकता कभी हुई नहीं, होगी नहीं और हो सकती भी नहीं। इस रीति से मनुष्य की भगवान के साथ स्वत:-स्वाभाविक अभिन्नता है और संसार के साथ स्वत:-स्वाभाविक भिन्नता है। परन्तु भूल के कारण मनुष्य अपने को भगवान से और भगवान को अपने से अलग मान लेता है तथा अपने को शरीर का तथा शरीर को अपना मान लेता है। इस विपरीत

धारणा के कारण ही यह मनुष्य जन्म-मरण के चक्र में फँसा रहता है। जब यह विपरीत धारणा सर्वथा मिट जाती है, तब भगवान स्वत: सुलभ हो जाते हैं।

सगुण-निराकार और निर्गुण-निराकार के स्मरणों में प्राणायाम की मुख्यता रहती है, जिसको सिद्ध करना कठिन है। अन्तकाल-जैसी विकट अवस्था में भी प्राणायाम के बल से प्राणों को भ्रुवों के मध्य में स्थापित कर सकें अथवा मूर्धा-(दशम द्वार-) में लगा सकें ऐसा प्राणों पर अधिकार रहने की आवश्यकता है। परन्तु भगवान के स्मरण में यह कठिनता नहीं है, क्योंकि यहाँ प्राणों का खयाल नहीं है। यहाँ तो भगवान के साथ साधक का स्वयं का अनादिकाल से स्वत: सिद्ध सम्बन्ध है। इस सम्बन्ध में इन्द्रियाँ, मन, बुद्धि, प्राण आदि की भी जरूरत नहीं है। अत: इसमें अन्तकाल में प्राण आदि को लगाने की जरूरत नहीं है। जैसे किसी वस्तु का बीमा होने पर वस्तु के बिगडने, टूटने-फूटने की चिन्ता नहीं रहती, ऐसे ही शरीर-इन्द्रियाँ-मन-बुद्धिसहित अपने-आपको भगवान के समर्पित कर देने पर साधक को अपनी गति के विषय में कभी किंचिन्मात्र भी चिन्ता नहीं होती। कारण कि यह साधन क्रियाजन्य अथवा अभ्यासजन्य नहीं है। इसमें तो वास्तविक सम्बन्ध की जागृति है। अत: इसमें कठिनता का नामोनिशान नहीं है। इसी से भगवान ने अपने—आपको सुलभ बताया है।

परिशिष्ट भाव:- अनन्यचेता: भक्त की दृष्टि में एक परमात्मा के सिवाय अन्य की सत्ता न होने से उसका मन अन्य जगह कैसे जायेगा? क्यों जायगा? कहाँ जायगा? इसलिये वह स्वत: अनन्यचित्तवाला हो जाता है।

सततं यो मां स्मरति नित्यश: एक 'करना' होता है और एक 'होना' होता है। जो करते हैं, वह क्रिया है और जो अपने-आप होता है, वह स्मरण है। जैसे, गीता के अन्त में अर्जुन ने कहा 'स्मृतिर्लब्धा' (गीता 18/73) तो वह स्मृति क्रिया नहीं है, प्रत्युत भगवान के साथ अपने नित्य सम्बन्ध की स्वत: होने वाली स्मृति है। भगवान के स्मरण में खास हेतु उनमें अपनापन है। भगवान् ही मेरे हैं और मेरे लिये हैं। इस प्रकार भगवान में अपनापन होने से स्वत: भगवान में प्रेम होता है और जिसमें प्रेम होता है, उसका स्मरण अपने-आप और नित्य-निरन्तर होता है। इसलिये भगवान ने सातवें अध्यायके आरम्भमें 'मय्यासक्तमना:' पद से अपने में आसक्ति अर्थात् प्रेम होने की बात कही है। तात्पर्य है कि केवल भगवान को ही अपना और अपने लिये मानने से साधक की भगवान में प्रियता हो जाती है। भगवान में प्रियता होने के बाद फिर भगवान का स्मरण स्वत: होता है।

'नित्ययुक्तस्य'- नित्य-निरन्तर भगवान के साथ जुड़ा हुआ होने से भक्त को 'नित्ययुक्त' कहा गया है। सातवें अध्यायके सत्रहवें श्लोक में 'तेषां ज्ञानी नित्ययुक्त:' पदों से भी यही बात कही गयी है। 'नित्ययुक्तस्य' पद से श्लोक के पूर्वार्ध में आयी सभी बातों का समाहार हो जाता है।

'तस्याहं सुलभ: पार्थ'- भगवान ने महात्मा को तो दुर्लभ बताया है। 'स महात्मा सुदुर्लभ:' (गीता 7/19), पर यहाँ अपने को सुलभ बताया है। इसका तात्पर्य है कि संसार में भगवान दुर्लभ नहीं हैं, प्रत्युत उनके तत्त्व को जानकर उनके शरण होने वाले भक्त दुर्लभ हैं। कारण कि भगवान को ढूँढ़े तो वे सब जगह मिल जायँगे, पर भगवान का प्यारा भक्त कहीं-कहीं ही मिलेगा।

हरि दुरलभ नहिं जगत में, हरिजन दुरलभ होय।
हरि हेयाँ सब जग मिलै, हरिजन कहिं एक होय।।

भगवान् कृपा करके जो मनुष्यशरीर देते हैं, उस शरीर से जीव अनेक योनियों में तथा नरकों में भी जा सकता है। परन्तु भक्त कृपा करके भगवान की ही प्राप्ति कराता हैं

हरि से तू जनि हेत कर, कर हरिजन से हेत।
हरि रीझै जग देत हैं, हरिजन हरि ही देत।।

वास्तवमें जो नित्यप्राप्त है, उसमें सुलभता -दुर्लभता कहना बनता ही नहीं। परन्तु लोगों ने उसको दुर्लभ (कठिन) मान रखा है, इस वृत्ति को हटानेके लिये भगवान ने अपने को सुलभ बताया है।

श्रीमद्भागवत कथा

(गोवत्स श्री विट्ठलकृष्ण जी महाराज)

.......पिछले अंक से आगे

गोपियों ने कौनसा तप किया? ग्वालों ने कौनसा तप किया? उनके साथ रह रहे हैं श्री कृष्ण, उनका जूठन खा रहे हैं क्यों? क्योंकि उनकी ऐसी भक्ति है। इसलिए देवी आप चिंता मत करिए। आपके माध्यम से तो जो बुलाना चाहे वह परमात्मा को कहीं भी बुला सकता है और हे देवी! आपको परमात्मा ने यही आदेश दिया था न कि मेरे भक्तों का पोषण करो। इसलिए आप चिंता मत करिए मैं प्रयास करता हूँ और यदि मैं इन ज्ञान और वैराग्य को युवा करने में, इनका मूल स्वरूप प्राप्त करने में सफल नहीं होता हूँ तो मैं भगवान का सच्चा दास नहीं। ऐसी प्रतिज्ञा करते हैं नारदजी।

अन्यधर्मास्तिरस्कृत्य पुरस्कृत्य महोत्सवान्।
तदा नाहं हरेर्दासो लोके त्वां न प्रवर्तये।।

यदि मैं आपकी स्थापना घर-घर में जन-जन में लोगों के हृदय में स्थापित न करूँ तो मैं परमात्मा का सच्चा दास नहीं हूँ। हे देवी! जिनके हृदय में भक्ति का निवास होता है उनका स्पर्श भी कोई नहीं कर सकता। कोई प्रेत पिशाच राक्षस आदि कोई भी नहीं कर सकता। जो परमात्मा का नाम केवल और केवल भक्तिपूर्वक ले उसका कोई कुछ नहीं बिगाड़ सकता।

अलं व्रतैरलं तीर्थैरलं योगैरलं मखै।
अलं ज्ञानकथालापैर्भक्तिरेकैव मुक्तिदा।।

बोले ये तीर्थ, तप, व्रत, ज्ञान ये सब धरे के धरे रह जाएंगे पर जो यदि कोई भक्ति की शरण ले लेगा तो वह मुक्ति को प्राप्त हो जायेगा। ज्ञान और वैराग्य को जगाने के लिये अब श्री नारद जी अपने प्रयास कर रहे हैं।

वेदवेदांतघोषैश्च गीतापाठैर्मुहुर्मुहु।
बांध्यमानौ तदा तेन कथंचिच्चोत्थितौ बलात्।।

वेद वेदान्त गीताजी सबका उद्घोष किया है और **ज्ञानं प्रबुध्यतां शीघ्रं रे वैरागय प्रबुध्यताम्।** अरे ओ ज्ञान! ओ वैराग्य! उठो-उठो! ऐसा सुनकर वे थोड़ी बहुत आँखें खोलते मुख से जमाई लेते और फिर वापस सो जाते। अब नारद जी को चिंता हो गई कि ये जग ही नहीं रहे हैं, आँखें भी नहीं खोल रहे हैं। जैसे ही वे चिंता में हुए कि अब बताइए ये लोग तो जग ही नहीं रहे हैं, उसी समय आकाशवाणी हो गई। हे ऋषि! हे देवर्षि! मन में खेद मत करो। बोले उद्यम करो और सत्कर्म करो। अब नारद जी जो इतनी देर कर रहे थे वह क्या सत्कर्म नहीं था? वेद का पाठ किया, वेदांत का पाठ किया, गीता जी का पाठ किया, उपनिषद का पाठ किया। नारद जी मन में सोच रहे हैं कि यह तो बता देते कि सत्कर्म कौन सा करना है? आगे और कह रहे हैं-

एतदर्थं तु सत्कर्म सुरर्षे त्वं समाचर।
तत्ते कर्माभिधास्यन्ति साधवः साधुभूषणाः।।

इसमें दो आकाशवाणी हुई। पहले तो यह कहा कि सत्कर्म करो। दूसरा कहा कि वह सत्कर्म तुम्हें संत बताएंगे। ना तो सत्कर्म का नाम बताया और ना ही संत का नाम बताया। इससे उलझन बढ़ गई नारद जी की तो। अब नारद जी सभी संतो के समीप जा रहे हैं। संतों से पूछ रहे हैं बताइए सत्कर्म क्या होता है? तो सभी संत तो आश्चर्य में पड़ गए। नारदजी संतों से पूछ रहे हैं कि बताइए सत्कर्म क्या होता है, तो सभी संत तो आश्चर्य में पड़ गए। बोले नारद जी हम लोगों से आकर पूछ रहे हैं? तो कई संत तो बोले हमारा तो मौन व्रत है, किसी ने कहा हमारा नवरात्रि व्रत चल रहा है। कई भाग गये, कई आँखें बंद करके बैठ गए। होना है ऐसा, नारद जी जैसा व्यक्ति पूछे तो? पूरी पृथ्वी में हाहाकार मच गया। इस समय नारदजी बद्रीवन पहुँचते हैं। बद्रिवन पहुँचते ही उनको किनका दर्शन होता है? इसी समय उन्हें अपने

सामने करोड़ों सूर्यो के समान तेजस्वी सनकादि मुनिश्वर दिखाइ दिये। उन्हें देखकर नारदजी कहने लगे-

सदा वैकुंठनिलया हरिकीर्तनतत्पराः।
लीलामृतरसोन्मत्ताः कथामात्रैकजीविनः।।

महात्माओं इस समय बड़े भाग्य से आप लोगों के साथ मेरा समागम हो रहा हैं। आप मुझ पर कृपा करके शीघ्र ही वो साधन बताइये। आप सभी लोग बड़े योगी, बुद्धिमान और विद्वान हैं। आप देखने में पाँच-पाँच वर्ष के बालक से जान पड़ते है, किन्तु है पूर्वजों के भी पूर्वज। आपलोग सदा वैकुण्ठ धाम में निवास करते हैं। निरंतर हरिकीर्तन में तत्पर रहते हैं, भगवत लीलामृत का रसास्वादन कर सदा उसी में उन्मत रहते हैं और एकमात्र भगवत कथा ही आपके जीवन का आधार है। हरिः शरणम्' (भगवान ही हमारे रक्षक है) यह वाक्य (मंत्र)सदा आपके मुख में रहता है। इसी से कालप्रेरित वृद्धावस्था भी आपको बाधा नहीं पहुँचाती।

पूर्वकाल में आपके भ्रूभंगमात्र से भगवान विष्णु के द्वारपाल जय और विजय तुरंत पृथ्वी पर गिर गये थे और फिर आपकी ही कृपा से वे पुनः वैकुण्ठलोक पहुँच गये। धन्य है, इस समय आपका दर्शन बड़े सौभाग्य से ही हुआ है। मैं बहुत दीन हूँ और आप लोग स्वभाव से ही बहुत दयालु हैं, इसलिये मुझ पर आपको अवश्य ही कृपा करनी चाहिये। हरि शरणम का कीर्तन करते-करते भगवान की लीला रास जो है उसमें सदा डूबे रहते हैं ऐसे सनत कुमार कीर्तन करते रहते हैं हर समय। कोई नित्य निरंतर यदि कीर्तन करता तो उसकी आयु स्थिर हो जाती है। है। 5 वर्ष के बालकों के रूप में सदा वैसे ही विद्यमान रहते हैं। कोई नित्य निरंतर यदि कीर्तन करता रहे तो उसकी आयु वहीं रुक जाएगी यही अर्थ हुआ ना। सनकादि ऋषियों ने कहा- हम हरि शरणम, हरि शरणम् का कीर्तन करते रहते हैं इसलिये आयु का प्रभाव हम पर भी नहीं होता है। यह संत वाक्य अर्थात प्रमाण है। हम लोग भी ऐसे निरंतर यदि हमारे अंदर नाम की, हरि शरणम् की लो लग जाए तो हमारी आयु भी यहीं रुक जाएगी। जो 40 का है वह 40 में रुक जाएगा, 30 का 30 में। श्री सनकादि ऋषियों को जब नारद जी ने अपना सारा दुःख सुनाया तब सनत कुमार आदि ऋषियों ने कहा हे देवर्षि! चिंता मत करो, उपाय है। बोलो क्या उपाय है? इसका उपाय बोले सभी वेदों का सार है। नारद जी ने कहा हमने वेद सुनाए, वेदांत सुनाए, गीताजी सुनाई उससे नहीं हुआ तो उसी में से निकले हुए का इतना ज्यादा महत्व हो गया क्या कि उससे हो जाएगा?

तब ब्रह्मऋषि कुमारों ने कहा कि देखिए आम के वृक्ष जो होते हैं उसे पूरे में रस होता है पर जो रस फल में होता है वह वृक्ष में होता है क्या? तो हम लोग यह कैसे कहें कि आम खा लो साथ में पट्टी भी खा लो हम लोग दूध पीते हैं गोमाता का उसी में घी है परंतु कोई यह कहता है कि हम लोग घी पी रहे हैं उसका सार घी निकलता है। ऐसे ही जो वेद वेदांत, उपनिषद आदि हैं उनका सार श्रीमद् भागवत है। श्रीमद् भागवत जी की कथा का निर्देश दिया है और नारद जी ने संतों को प्रणाम किया है कि महापुरुषों आपका दर्शन संपूर्ण पापों को तत्काल विनाश कर देता है।

भाग्योदयेन बहुजन्म समर्जितेन सत्संगम् च
लभते पुरुषो यदा वै।
अज्ञान हेतुकृतमोहमदान्धकारनाशम् विधाय
हि तदोदयते विवेकः।।

असंख्य जन्मों का भाग्य उदय होता है बहु जन्मों के पुण्य जो है वह संचित होते हैं तब जाकर के परमात्मा की प्राप्ति होती है। तब जाकर के परमात्मा की प्राप्ति कराने वाले संतों से मिलन होता है। संत मिलन इतना सरल नहीं है।.......शेष अगले अंक में

जाऊँ तो जाऊँ कहाँ?

(अम्बा लाल सुथार, सम्पादक)

(एक गोमाता और बछड़े की दर्द भरी कहानी)

पिछले अंक से आगे.......

फिर दूसरे दिन बरसात होने लगी। जो रुकने का नाम नहीं ले रही। इस प्रकार सड़ा गला चारा खाकर उस जगह पर 7 दिन निकाल दिये। इस भरे जंगल में माँ बेटे के अलावा किसी की शक्ल देखने को नहीं। जबकि मनुष्यों के बिना गोमाता अकेली कभी रहती नहीं है। निराश्रित गोमाता भी दिन भर कहीं भी चरती रहेगी लेकिन रात्री में कहीं न कहीं सड़क किनारे होटल-ढ़ाबों पर या किसी पेट्रोल पम्प पर आकर बैठती है।

मनुष्य को यह समझ लेना चाहिये कि गोमाता हमारे घर का एक मुख्य भाग है, एक प्रमुख सदस्य है। गोमाता घर की लक्ष्मी है, देवी शक्तियों का स्रोत है। घर में पोजिटिव एनर्जी (शुभ कार्यो के लिये आवश्यक ऊर्जा) गोमाता से प्राप्त होती है। घर से अगर गोमाता को निकाल दिया इसका मतलब आपका घर अब अधूरा है, अपूर्ण है, देवी शक्तियों से रहित है। गोमाता के घर से निकलते ही घर में भारी वास्तु दोष आ जाता है। घर का सबसे बड़ा वास्तु दोष ही गोमाता की अनुपस्थिति है। ऐसे लोग अपने घर की पोजिटिव एनर्जी बढ़ाने के लिये तरह-तरह के टोटके करते हैं, वास्तु शास्त्रियों के पास भटकते रहते हैं। वास्तु शास्त्री भी बेचारे सब गोविहिन है, उनको भी यह कहाँ सूझता है कि गोमाता को घर में रखने से सारे वास्तुदोष मिट जाते हैं। यहाँ तक कि कहीं भी श्रद्धापूर्वक की गई गोसेवा से घर के वास्तु दोष भाग जाते हैं। मगर गाय में श्रद्धा नहीं होने से आधुनिक वास्तु शास्त्री छोटे-छोटे उपाय बताते हैं। हमको प्यास लगी हो तो क्या पीठ पर हलवा बांधने से प्यास बुझ जायेगी? यही हाल आज के मूर्ख मनुष्य का है।

जैसे-तैसे करके गोमाता ने इस झोंपड़ी में 7 दिन तो गुजार दिये लेकिन आगे अब अपने और वत्य शिवा के प्राण बचाने असम्भव हैं बरसात तो अब हुई है, खाने योग्य घास अभी 15-20 दिनों में तैयार होगी। तब तक भूख के मारे प्राण चले जायेंगे।ऐसे में गोमाता ने निर्णय किया कि पानी को पार कर निकल जाएं यहाँ से। वो वत्स शिवा को समझाती है।

गोमाता: शिवा बेटा! अब अपने को यहाँ से निकलना पड़ेगा। यह जो चारों तरफ पानी पड़ा है इसको तैरकर पार करना है। बिल्कुल भी डरना मत, एक बार थोड़ा ठण्डा लगेगा तो भी हिममत रखकर मेरे पीछे उतर जाना पानी में। मैं आगे-आगे चलूंगी तूं मेरे पीछे-पीछे आते रहना, जरा सा भी इधर-उधर मत होना, पानी में कहीं डूब जायेगा।

शिवा: ठीक है माँ, मैं तेरे पीछे-पीछे चलता रहूंगा। तूं धीरे-धीरे चलना।

गोमाता: चल आजा बेटा, यहाँ से प्रवेश करके वो सामने जमीन दिख रही है, वहाँ निकलना है। मुँह ऊंचा रखना, नाक में पानी मत घुसने देना।

ऐसा कहकर गोमाता पानी में प्रवेश कर गई। शिवा भी माँ के पीछे-पीछे धीरे-धीरे चल रहा है। आरम्भ पानी 1 फुट तक ही था, आगे गहरा हो रहा है, फिर भी शिवा अपना मुँह ऊपर रखते हुए आगे बढ़ रहा है। आधे से अधिक भाग पार हो गया और आगे नदी की धारा आ गई। गोमाता एक बार रुकी और विचार करने लगी कि शिवा इसको पार कर सकेगा या नहीं।

शिवा: माँ मैं तो बहुत थक गया हूँ। मुझे ठण्ड लग रही है। भूख भी लगी है। आगे कैसे चलूंगा? थोड़ा रुक जा यहाँ। मुझे दूध पिला।

गोमाता: नहीं बेटा! हिम्मत मत हारो। अभी बस थोड़ा ही रास्ता बचा है। ..शेष अगले अंक में

श्री अभिनव ब्रज मण्डल अर्बुदारण्य नंदगांव केसुआ में सम्पन्न हुआ श्री सुरभि संसद अधिवेशन

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास के संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम् श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंद जी महाराजश्री के पावन सानिध्य में और न्यास के कार्यवाहक प्रधान संरक्षक पूज्य श्री राधाकृष्णजी महाराज के सभापतित्व में 24 अगस्त रविवार को श्री अभिनव ब्रज मण्डल अर्बुदारण्य नंदगाँव केसुआ में श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास का एक दिवसीय सुरभि संसद का राष्ट्रीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ।।

राष्ट्रीय अधिवेशन का शुभारंभ गोपूजन, अर्चन, आरती एवं सर्वहितकारी सामूहिक प्रार्थना से हुआ। इस शुभारम्भ पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण महाराज ने अपने करकमलों से किया। अधिवेशन की अध्यक्षता भी कार्यकारी प्रधान संरक्षक पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज ने की।

गोसेवा महानिर्देशक श्री धनराजजी चौधरी ने गत बैठक की कार्यवाही का पठन किया जिसका उपस्थित सदस्यों ने सर्वसम्मति से अनुमोदन किया। न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष श्री रघुनाथसिंह जी राजपुरोहित ने अध्यक्षीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। न्यास के महामंत्री श्री अर्जुनसिंह जी अंकलेश्वर ने संस्थागत महामंत्रीय प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। न्यास के कोषाध्यक्ष श्री ओमप्रकाश जी गर्ग ने वित्तीय वर्ष 2024-25 का आय-व्यय और वर्तमान आर्थिक स्थिति का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया। न्यास के मुख्य प्रशासनिक अधिकारी (सीईओ) श्री आलोक जी सिंहल ने आगामी वर्ष की गोसेवा आवश्यकताओं, का बजट प्रस्तुत किया, जिसे चर्चा उपरान्त सर्वसम्मति से स्वीकृति दी।

अधिवेशन में दिल्ली, सूरत, कर्णावती, कोलकाता, हैदराबाद आदि महानगरों में पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज के सानिध्य में प्रवास कर गोसेवा महाअभियान चलाने का निर्णय किया। अभिनव ब्रजमंडल में नवीन गोचिकित्सालय और वेदलक्षणा गोसंवर्धन केंद्र की स्थापना। 10 से 20 हजार लीटर गोर्गेनिक दूध उत्पादन एवं गोर्गेनिक कृषि अभियान प्रारंभ करने का निर्णय हुआ। पंचगव्य शोध, अनुसंधान, प्रशिक्षण एवं प्रयोग की व्यवस्थाएं शुरू करने पर चर्चा हुई। कांकरेज, थारपाकर, नायरी, साहिवाल, काछरगोड़ी, गीर, राठी व सांचोरी नस्लोंके संवर्धन को आरम्भ करने कर विचार विमर्श हुआ।

अभिनव ब्रजमंडल को गोसेवा और पर्यावरणीय दृष्टि से आदर्श बनाने के लिए डीजल, पेट्रोल, गैस से चलने वाले वाहनों का प्रवेश निषेध तथा श्वान, सूअर और मांसभक्षी प्राणियों के प्रवेश पर रोक का निर्णय हुआ। गोसेवकों एवं कर्मचारियों को प्रतिमाह 2 सवैतनिक अवकाश तथा वेतन वृद्धि का लाभ प्रदान करने पर चर्चा की गई।

आगामी गोनवरात्र महोत्सव को अभिनव ब्रजमंडल में ही आयोजित करने का निर्णय हुआ। अधिवेशन में पूज्य महंत श्री दिनेशगिरि जी महाराज, पूज्य संत श्री गोविंदवल्लभदासजी महाराज और महंत श्री योगेशदासजी महाराज ने मार्गदर्शन दिया। न्यास के केंद्रीय अध्यक्ष श्री प्रदीप बंसल ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में गोसेवकों से तन-मन-धन से सेवा में जुड़ने का आह्वान किया। अधिवेशन के अंत में सभापति पूज्य गोवत्स श्री राधाकृष्ण जी महाराज ने गोग्रास सेवा के साथ समयदान का विशेष आह्वान किया। कई सदस्यों ने लिखित रूप में अपने समयदान संकल्प प्रस्तुत किए जिन्हें शीघ्र ही उनकी रूचि अनुसार गोसेवा कार्यो से जोड़ा जाएगा।

क्षेत्र की प्रथम कावड़ यात्रा कावड़ियों द्वारा श्री कामधेनु कोटितीर्थ श्री गोधाम पथमेड़ा के पवित्र जल से श्री अभिनव ब्रज मण्डल, श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ में विराजित श्री गोपेश्वर महादेव का किया जलाभिषेक

श्रावण मास में आयोजित होने वाली कावड़ यात्रा भगवान शिव को समर्पित वार्षिक तीर्थयात्रा है।

हमारे क्षेत्र में प्रथम बार श्री गोपेश्वर कावड़ यात्रा का अपूर्व आयोजन दर्शन अष्टमी 1 अगस्त को श्री गोधाम महातीर्थ आनंदवन पथमेड़ा सांचोर के कामधेनु कोटि तीर्थ सरोवर से पवित्र जल लेकर पूज्य संतों एवं गोवत्स श्री विट्ठलकृष्णजी द्वारा शुभारंभ हुआ।

उक्त यात्रा के मार्ग में आने वाले शिवालयों, गौशालाओं एवं नंदीशालाओं में पंचवटी लगाते हुए सुंधापर्वत (अभिनव गोवर्धन)की परिक्रमा करते हुए श्री गोपेश्वर(108 किलो का पारद शिवलिंग) महादेव का अभिषेक करने हेतु अभिनव ब्रज मंडल श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ नंदगांव पांचवें दिन पहुँची।

प्रथम दिन का रात्रि विश्राम एवं भजन संध्या कीर्तन कार्यक्रम श्री पातालेश्वर महादेव सेवाड़ा में किया, दूसरी रात्रि का विश्राम एवं भजन संध्या वात्सल्य धाम रानीवाड़ा खुर्द में हुआ, तीसरा रात्रि विश्राम एवं भजन कीर्तन सुंधापर्वत पर और चौथा रात्रि विश्राम जसवंतपुरा (ऐतिहासिक लोयाणागढ़ राजा चंदन की नगरी)में किया और दिनांक 04 अगस्त, सोमवार को अर्बुदारण्य के श्री अभिनव ब्रज मण्डल श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ में कावड़ियों द्वारा नंद टीला पर विराजित श्री गोपेश्वर महादेव का सैंकड़ों पूज्य संतो, महंतो, शिवभक्तों और गोभक्तों की उपस्थिति में जलाभिषेक किया गया।

श्री अभिनव ब्रज मण्डल में गोपेश्वर कावड़ यात्रा का दिव्य स्वागत, वैदिक अनुष्ठान व गोभक्ति से गूंजा श्री अभिनव ब्रज मण्डल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की शाखा श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ में चल रहे श्री गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव के अंतर्गत सोमवार को श्री गोपेश्वर कावड़ यात्रा का भव्य स्वागत के साथ आध्यात्मिक वातावरण में समापन हुआ।

परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराज की पावन उपस्थिति में आयोजित इस पुण्य अवसर पर सैकड़ों श्रद्धालुजन भक्तिभाव से सहभागी बने। महाराजश्री ने अपने प्रवचन में कहा कि गोपेश्वर कावड़ यात्रा मात्र एक धार्मिक परंपरा नहीं, बल्कि यह आत्मशुद्धि, गोसेवा तथा सनातन संस्कृति के आदर्श मूल्यों की पुनर्स्थापना का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि श्री कामधेनु कोटितीर्थ से लाया गया पवित्र जल ब्रजभूमि की कृपा का प्रतीक है, जो साधक के भीतर भक्ति, समर्पण और गोप्रेम की भावनाओं को प्रज्वलित करता है।

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के केन्द्रीय संयोजक गोसंत श्री नंदरामदासजी महाराज ने बताया कि यह यात्रा दिनांक 1 अगस्त को संत श्री महादेवानंदजी सरस्वती एवं गोवत्स श्री विठ्ठल कृष्ण जी के मार्गदर्शन में श्री कामधेनु कोटितीर्थ से आरंभ हुई थी। श्रद्धालुजनों ने कंधों पर कांवड़ रखकर पवित्र जल के साथ भक्तिभाव से भरे भजन-कीर्तन और मंगलघोष के बीच नंदगांव स्थित मनोरमा गोलोकतीर्थ की ओर यात्रा की। मार्गभर ग्रामीणों और भक्तों ने जगह-जगह पुष्पवर्षा, भजन-नृत्य तथा आत्मीय स्वागत के साथ यात्रा का अभिनंदन किया।

यात्रा की पूर्णाहुति पर दिनांक 4 सितम्बर को श्री अभिनव ब्रज मण्डल परिसर में स्थापित पारद शिवलिंग श्री गोपेश्वर महादेव का कावड़ में लाये गये पवित्र जल से वैदिक मंत्रोच्चारण और हर हर महादेव के साथ विधिपूर्वक अभिषेक संपन्न हुआ।

सुर धेनु धर्म ओढ़नी यात्राओं से श्री अभिनव ब्रज मण्डल नंदगांव का वातावरण हो रहा धर्ममय

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा की शाखा अभिनव ब्रज मण्डल श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ नंदगांव केसुआ में चल रहे श्री गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव के अंतर्गत देशभर से आ रही सुरधेनु धर्म ओढ़नी यात्राओं से यहाँ का वातावरण धर्ममय हो उठा है। यात्राओं में शामिल गोभक्तों का उत्साह देखते ही बन रहा है।

इन यात्राओं का आयोजन सनातन धर्म की परंपराओं के संरक्षण और राष्ट्रीय रचनात्मक गोसेवा महाअभियान को जन-जन तक पहुँचाने के उद्देश्य से श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा द्वारा इसके संस्थापक एवं प्रधान संरक्षक परम श्रद्धेय गोऋषि स्वामी श्री दत्तशरणानंदजी महाराजश्री की प्रेरणा से किया जा रहा है। यात्राएँ राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश सहित देशभर के गाँवों, कस्बों और नगरों से शुरू होकर यहाँ आ रही है। अब तक 65 स्थानों से सुर धेनु ओढ़नी यात्राएं अभिनव ब्रज मंडल श्री मनोरमा गोलोक तीर्थ नंदगांव पहुँच चुकी हैं।

इस यात्रा आयोजन के अंतर्गत स्थानीय गोभक्तों के नेतृत्व में प्रत्येक सनातन धर्मी हिन्दू परिवार से न्यूनतम एक मुट्ठी श्री अन्न और 1 रुपया धर्मनिधि एकत्र की जाती है, इसके अतिरिक्त अपनी श्रद्धा से जिसकी जितनी इच्छा हो उतना श्रीअन्न और धर्मनिधि समर्पित कर सकते हैं। सामूहिक रूप से संकलित श्रीअन्न गोमाता के भंडारे हेतु और धर्मनिधि भगवान श्री गोपाल जी की सेवा एवं भोग प्रसाद में समर्पित की जाती है। इससे साधारण से साधारण परिवार भी इस गोसेवा महाअभियान से जुड़ रहे हैं।

यात्राओं का मुख्य उद्देश्य साधारण से साधारण सनातन धर्मी परिवारों को भी गोसेवा महाधर्म में सहभागी बनाना है। आषाढ़ शुक्ल गुरु पूर्णिमा से आरम्भ हुआ यह सुर धेनु धर्म ओढ़नी यात्रा अभियान 4 माह पर्यन्त पूरे चातुर्मास में इसी क्रम से चलता रहेगा। देश के समस्त सनातन धर्मावलम्बियों से अनुरोध है कि वे भी इसका लाभ लें और एक बार यहाँ अभिनव ब्रज मण्डल अलौकिक गोधाम के दर्शन करने अवश्य पधारें।

यहाँ पहुँचने पर नंदिनी विहार में अपने हाथों से गोमाता के लिये वृक्षारोपण का अवसर मिलता है। धर्माचार्य में श्री गोवर्धननाथजी के अलौकिक दर्शन होते हैं। गोमाता की परम कृपा और संत-महात्माओं का मंगल आशीर्वाद भी प्राप्त होता है। यह आयोजन भारतीय जनमानस में सनातन धर्म की जड़ों को गहरा करने और समाज में धर्मनिष्ठा व गोसेवा की भावना को सशक्त बनाने का कार्य कर रहा है।

कार्यक्रम में यह संदेश दिया जा रहा है कि गोमाता वात्सल्य की टकसाल है। सम्पूर्ण सृष्टि में वात्सल्य का भाव वेदलक्षणा गोमाता से ही प्रवाहित होता है। बछड़े-बछड़ी के जन्म के साथ ही गोमाता अपने दूध से उन्हें वात्सल्य भाव प्रदान करती है। इसी भाव से प्रेरणा लेकर गोभक्तों से जीवन को गोसेवा के लिए समर्पित करने का आह्वान किया जा रहा है।

आयोजकों द्वारा सभी धर्मात्मा भाई-बहनों से आह्वान किया जा रहा है कि वे भी अपने-अपने गाँव, नगर और मोहल्लों से सुरधेनु धर्म ओढ़नी यात्राएँ लेकर अभिनव ब्रज मण्डल नंदगाँव पहुँचें और इस धर्मयज्ञ में सहभागी बनकर अक्षय पुण्य अर्जित करें।

हिन्दी मासिक पत्रिका ''कामधेनु कल्याण'' स्वामी ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा'' के लिए प्रकाशक एवं सम्पादक अम्बा लाल सुथार, मुद्रक पुरखाराम पुरोहित चारभुजा प्रिंटिंग प्रेस, गोमाता सर्किल, हाडेचा रोड़ साँचौर से मुद्रित करवाकर ''श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला'' पथमेड़ा, तहसील-सांचौर, जिला-जालोर (राजस्थान) 343041 से प्रकाशित।

॥ श्री कामधेन्वै नमः॥

श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुण्यार्थ न्यास

श्री सुरभि पंचगव्यायुर्वेद आरोग्यकुलम

आस्थावान मानव जाति को संपूर्ण आरोग्य प्रदान करने हेतु वेदलक्षणा पंचगव्यायुर्वेद चिकित्सा गो थेरेपी को पुनः प्रतिष्ठित करने की ईश्वरीय प्रेरणा हुई है। श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा के वैदिक गो उत्पाद फाउंडेशन द्वारा संचालित सुरभि पंचगव्यायुर्वेद आरोग्यकुलम मे आवासीय चिकित्सा शिविरों के माध्यम से असाध्य रोग निदानार्थ उपरोक्त पंचगव्य आयुर्वेद चिकित्सा उपलब्ध करवाई जा रही है।

उपलब्ध सुविधाएं

1.स्त्री रोगः रक्त प्रदर, श्वेत प्रदर, मासिक धर्म की अनियमितता, कमर दर्द **2.बालरोगः** निमोनिया, खांसी, बुखार, वमन, अतिसार, अतिकृषता **3.पेट के रोगः** गैस, कब्ज, अतिसार, अरुचि, अपच **4.श्वास रोगः** दमा, खांसी, जुकाम, निमोनिया, एलर्जी **5.मानसिक रोगः** उन्माद, अपस्मार, अनिद्रा, शिरोरोग **6.** पथरी, मूत्र रोग एवं गुदा रोग (अर्श, परिकर्तिका आदि) **7.** संधिवात, आमवात, पेशी स्तब्धता, सभी प्रकार के जोड़ो का दर्द **8.चर्मरोगः** खाज,खुजली, फोड़ा, फुन्सी, त्वचा पर दाग **9.** मधुमेह, बी.पी., मोटापा **10.** योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा

अभिनव ब्रजमण्डल श्री मनोरमा गोलोकतीर्थ नंदगांव, केसुआ तह. रेवदर सिरोही

Phone - 7073000198, 7665000906

कुल पृष्ठ- 36
सितंबर 2025

प्रकाशन तिथी : 01 सितंबर 2025
कामधेनु कल्याण 20 रुपए

RNI Reg- No - RAJHIN/2022/17167
Postal Reg No : RJ/SRO/9681/2025-2027

गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव

(10 जुलाई से 01 नम्बर 2025)

श्री सुरधेनु धर्म ओढणी यात्रा

आप सभी सनातन धर्म प्रेमी भाई–बहिन यह जानकर अत्यंत आनंदित होंगे कि गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास आराधना महोत्सव में जन–जन को सहभागी बनाने के लिए चातुर्मास आयोजन समिति द्वारा राजस्थान, गुजरात सहित भारतवर्ष के सभी नगरों और गांवों से सुरधेनु धर्म यात्राएं आयोजित की जा रही है।

उपरोक्त यात्रा आयोजन के अंतर्गत स्थानीय चातुर्मास समितियों के नेतृत्व में सनातनधर्मी हिन्दुओं के प्रत्येक घर से न्यूनतम एक मुठ्ठी श्रीअन्न तथा एक रुपया धर्मनिधि संकलित करके सामुहिक रूप से सभी धर्मात्मा भाई–बहिन सुरधेनु धर्म ओढनी यात्रा लेकर अभिनव ब्रजमण्डल मनोरमा गोलोकतीर्थ अर्बुदारण्य नंदगांव पधारेंगे।

आदरणीय सज्जनों, सनातन धर्मपरायण श्रद्धालुओं से प्राप्त श्रीअन्न और धर्मनिधि का उपयोग श्री गोपालजी को भोग लगाकर श्री गो गोवर्धन कृपा चातुर्मास अनुष्ठान में विराजमान संत महात्माओं को भिक्षा प्रसाद एवं गोवंश को भण्डारा प्रदान करने में किया जायेगा।

इस अभूतपूर्व कार्यक्रम सुरधेनु धर्म ओढणी यात्रा का मुख्य उद्देश्य साधारण से साधारण सनातन धर्मी हिन्दू परिवारों को चातुर्मास आराधना महोत्सव के धर्मानुष्ठान का सहयोगी बनाना है।

अत: आप सभी धर्मात्मा सज्जन भाई–बहिनों से सादर अनुरोध है कि उपरोक्त धर्मबेल का विस्तार करते हुए अपने–अपने नगर, मोहल्ला, गांव से सुरधेनु धर्म ओढणी यात्राएं लेकर अभिनव ब्रजमण्डल मनोरमा गोलोकतीर्थ अर्बुदारण्य नंदगांव पधारिए और अभिनव ब्रजमण्डल के नंदिनी विहार वन में वृक्षारोपण, श्री गोवर्धननाथजी के अलौकिक दर्शन, सुरभि हरिहर महापूजन एवं गोसंत महात्माओं के आशीर्वाद से अपने जीवन को धन्य कीजिए।

निवेदक: चातुर्मास आयोजन समिति, श्री गोधाम महातीर्थ पथमेड़ा लोक पुन्यार्थ न्यास
संपर्क नंबर – 7742093179, 7742093200, 9760635735